ॐ श्री गणेशाय नमः

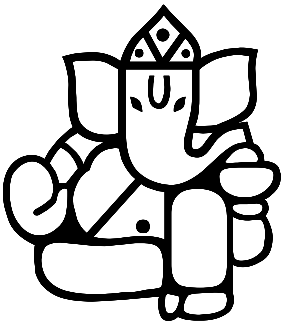

Horoscope of **S.BOOPATHY**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Astrowin,Selvi Xerox,

~~~~~~

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

~~~~~~

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

Astro-Vision
YOUR TOMORROW

नाम : S.BOOPATHY [पुरुष]
सप्ताह के दिन में। : रविवार

क्योंकि आपने रविवार में जन्म लिया है, आपको जीवन में मुसीबतों का सामना करने की शक्ति होगा । लोग आपके ईमानदारी और बुद्वि वैभव पर प्रशांसा करेगें । आप यात्रा करना पसंद करते है ।

जन्म नक्षत्र : हस्त

जन्म नक्षत्र हस्त है। आप उत्साही, मेधावी, शूरवीर, निडर, मनस्वी, यशस्वी, परदेश में रहनेवाले और दूसरों के काम आनेवाले व्यक्ति हैं। गुरुजनों, विद्वानों और धर्माचार्यों को सम्मान देंगे। सब तरह की संपत्ति प्राप्त होगा, चाहे न्यून मात्रा में ही। शास्त्र के इन वचनों की ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा - 'असत्य भाषणों धूर्तः सुरापो बन्धुवर्जितः। हस्ते जातो नरचैव जायते परदारिकः।।' अर्थात् हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति असत्य भाषी, धूर्त, मधपी, बन्धुहीन या बन्धुओं से मिलजुल कर न रहनेवाला और परदारगामी होता है।

तिथि : अष्टमि

आप का जन्म अष्टमी तिथि में होने से आप स्वतन्त्रता एवं स्वच्छन्दता प्रिय हैं। जब इस में रुकावट या पराजय हो जाय तो आप का मन विद्रोही बन जाता है। आप सदा अपने व्यक्तित्व और कीर्ति को मलिनता से दूर रखना पसंद करते हैं। साधारण स्थिति में आप शान्त और गंभीर हैं। आप का शरीर सुन्दर है और आकर्षक है। आमोद, प्रमोद और वासनामय कार्य के रसिक हैं।

करण : वाध

बलवा करना में जन्म लेने के कारण आप एक स्वतंत्र चिन्तक होगें । आपके ऊपर नियंत्रण करना आप रोकते है । रिशतेदारों को आप ज्यादा महत्व नहीं देते ।

नित्ययोग : शोभना

शोभन नित्ययोग में जन्म होने से आपको दृश्यकलाओं तथा उनके प्रदर्शन में अधिक रुचि रहेगी। आप सभी वस्तुओं को कलात्मक दृष्टि से देखते हैं। अधिक संपत्ति और सुख आपको प्राप्त होगा। अच्छे संबन्धियों की कमी नहीं रहेगी। आप ताकतवर हैं। आप भाग्यदेव से अनुगृहीत हैं। सुख और संपत्ति आपके चरणों में हाज़िर रहेगी। स्वादिष्ट भोजन के इच्छुक हैं। हर कार्य पूरे मन और उत्साह के साथ करने वाले हैं।

नाम	: S.BOOPATHY
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 2 जानुवरी, 1978 सोमवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 06.00.00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05.30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Tiruppur (tn)
रेखांश : अक्षांश (Deg.Mins)	: 077.20 पूरब , 11.05 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 33 मिनिट. 3 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: हस्त - 1
जन्म राशी - राशी का देव	: **कन्या** - बुध
लग्न - लग्न का देव	: धनु - गुरु
तिथि	: अष्टमि, कृष्णपक्ष
सूर्योदय	: 06.40AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06.09PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 11.29
दिनामान (Ghati. Vighati)	: 28.42
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 21 Mins
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: रविवार
कलिदिना	: 1855044
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: चन्द्र
गणम्, योनी, जानवर	: देव, स्त्री, भैंस
पक्षी , पेड	: कौआ, भेल वृक्ष
चन्द्र अवस्था	: 2 / 12
चन्द्र वेला	: 5 / 36
चन्द्र क्रिया	: 9 / 60
ठगड़ा राशी	: मिथुन, कन्या
करण	: वाध
नित्ययोग	: शोभना
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: धनु - पूर्वषाढा
अनगदित्य का स्था	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Capricon
योगी पोयन्ट् - योगी नक्षत्र	: 152:50:31 - उत्तर फालगुनी
योगी गृह	: रवि
द्वगुणति योगी	: बुध
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: अनुराधा - शनि
आत्म करक - करकांसा	: बुध - मीन
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: रवि
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: धनु
धन अरुढ़ा	: मीन

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का चिह्न - मकर

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	271:09:20	गुरु	89:43:19 रितु
चन्द्र	185:20:41	शनि	150:07:19 रितु
सूर्य	281:15:55	युरानस	225:21:42
बुध	261:14:07	निपट्यून	256:47:29
शुक्र	276:26:18	प्लूटो	196:37:11
कुज	128:47:29रितु	नोड	190:29:59

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 33 मिनिट. 3 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	247:36:17	धनु	7:36:17	मूल	3
चन्द्र	161:47:38	कन्या	11:47:38	हस्त	1
रवि	257:42:53	धनु	17:42:53	पूर्वषाढा	2
बुध	237:41:04	वृशचिक	27:41:04	ज्येष्ठ	4
शुक्र	252:53:15	धनु	12:53:15	मूल	4
मंगल	105:14:26	कर्क	15:14:26रितु	पुष्य	4
गुरु	66:10:16	मिथुन	6:10:16रितु	मृगशिरा	4
शनि	126:34:16	सिंह	6:34:16रितु	मघा	2
राहु	166:56:56	कन्या	16:56:56	हस्त	3
केतु	346:56:56	मीन	16:56:56	रेवत्ति	1
गुलिक	137:05:57	सिंह	17:05:57	पूर्व फालगुनी	2

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	मूल	केतु	गुरु	गुरु
चन्द्र	हस्त	चन्द्र	मंगल	रवि
रवि	पूर्वषाढा	शुक्र	मंगल	शनि
बुध	ज्येष्ठ	बुध	गुरु	राहु
शुक्र	मूल	केतु	बुध	गुरु
मंगल	पुष्य	शनि	गुरु	शनि
गुरु	मृगशिरा	मंगल	चन्द्र	शनि
शनि	मघा	केतु	राहु	बुध
राहु	हस्त	चन्द्र	शनि	चन्द्र
केतु	रेवत्ति	बुध	बुध	केतु
गुलिक	पूर्व फालगुनी	शुक्र	चन्द्र	शुक्र

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	धनु	7:36:17	मूल / 3	गुरु	मिथुन	6:10:16R	मृगशिरा / 4
चन्द्र	कन्या	11:47:38	हस्त / 1	शनि	सिंह	6:34:16R	मघा / 2
रवि	धनु	17:42:53	पूर्वषाढा / 2	राहु	कन्या	16:56:56	हस्त / 3
बुध	वृशचिक	27:41:04	ज्येष्ठ / 4	केतु	मीन	16:56:56	रेवत्ति / 1
शुक्र	धनु	12:53:15	मूल / 4	गुलिक	सिंह	17:05:57	पूर्व फालगुनी / 2
मंगल	कर्क	15:14:26R	पुष्य / 4				

राशी

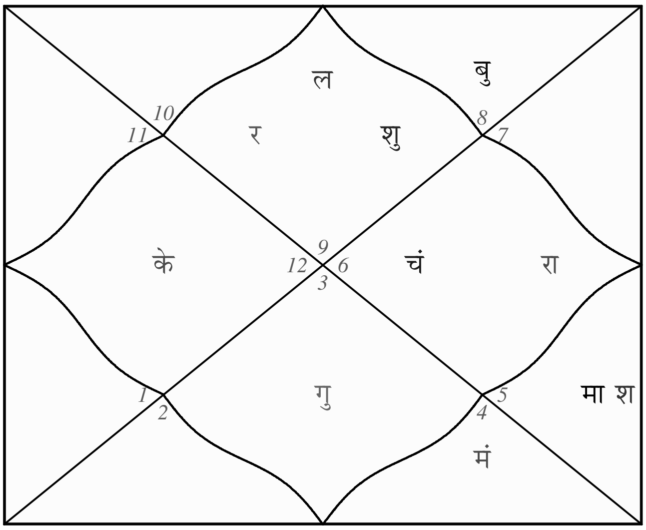

नवांश

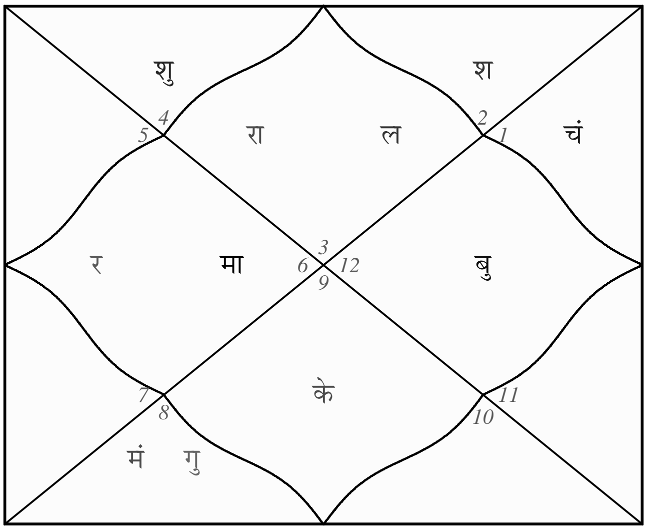

जन्म के समय दशा की समतुलना = चन्द्र 8 साल, 7 महीने, 26 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

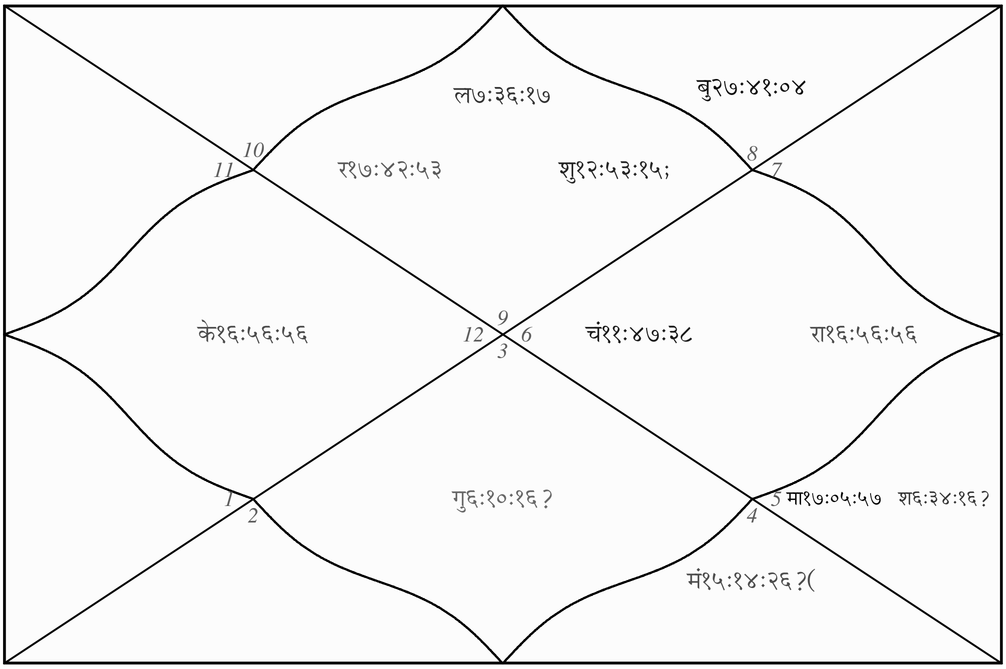

? विपरीत परिस्थिती   **)** श्रेष्ट समय   **(** क्षीण परिस्थिती   **;** सयहोग

नवांशः   चं::मेष   र::कन्या   बु::मीन   शु::कर्क   मं::वृशचिक

गु::वृशचिक   श::वृषभ   रा::मिथुन   के::धनु   ल::मिथुन   मा::कन्या

जन्म के समय दशा की समतुलना = चन्द्र 8 साल, 7 महीने, 26 दिन

भाव कुंडली

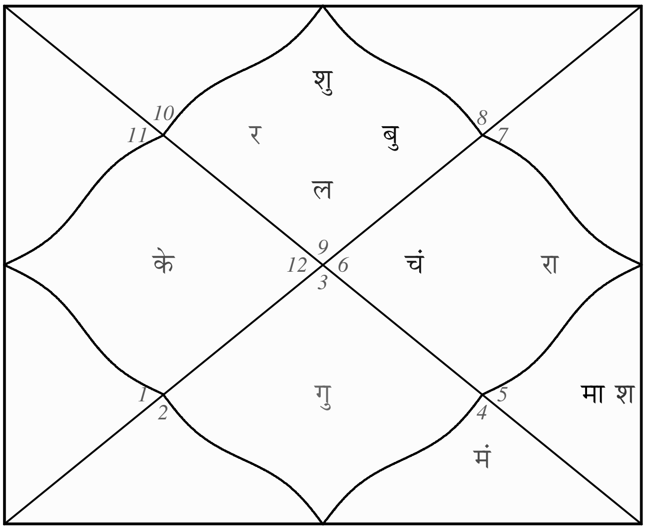

भाव टेबुल

भाव	आरंभ डि : मि :से	मध्य डि : मि :से	अन्तिम डि : मि :से	गृहों भाव में उपस्थित है
1	233:31:30	247:36:17	263:31:30	र बु शु
2	263:31:30	279:26:43	295:21:57	
3	295:21:57	311:17:10	327:12:23	
4	327:12:23	343:07:37	357:12:23	के
5	357:12:23	11:17:10	25:21:57	
6	25:21:57	39:26:43	53:31:30	
7	53:31:30	67:36:17	83:31:30	गु
8	83:31:30	99:26:43	115:21:57	मं
9	115:21:57	131:17:10	147:12:23	श मा
10	147:12:23	163:07:37	177:12:23	चं रा
11	177:12:23	191:17:10	205:21:57	
12	205:21:57	219:26:43	233:31:30	

सुदर्शन चक्र

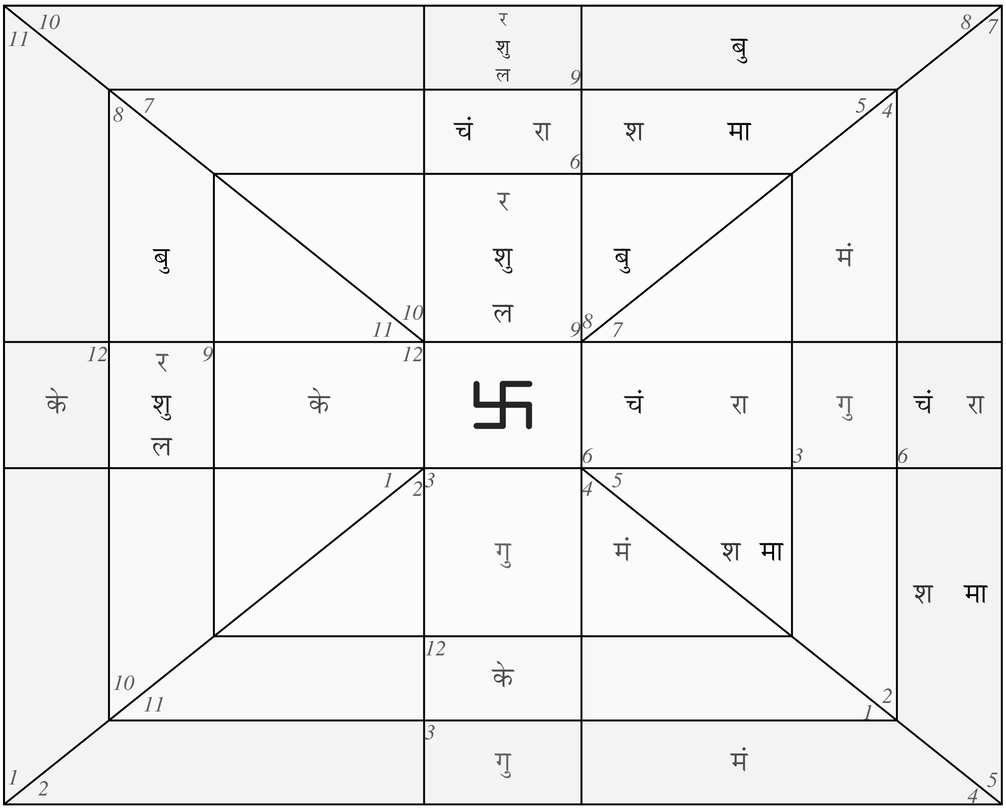

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
कुज	धुमा	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहू	व्यातीपटा	360 - धुमा
चन्द्र	परिवेश	180 + व्यातीपटा
शुक्र	इन्द्रचाप	360 - परिवेश
केतू	उपकेतु	इन्द्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि (घंटा)	10 गटि (घंटा)
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
सूर्य	काल	22:50:37	00:24:29
बुध	अर्धप्रहर	03:32:15	05:06:07
कुज	मृत्यु	01:58:22	03:32:15
गुरु	यमकन्ठका	18:08:59	19:42:52
शनि	गुलिक	21:16:45	22:50:37

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	144:54:31	सिंह	24:54:31	पूर्व फालगुनी	4
अर्धप्रहर	213:49:35	वृशचिक	3:49:35	अनुराधा	1
मृत्यु	191:39:08	तुला	11:39:08	स्वाति	2
यमकंठक	78:04:59	मिथुन	18:04:59	आर्द्र	4
गुलिक	121:44:49	सिंह	1:44:49	मघा	1
परिवेष	148:57:06	सिंह	28:57:06	उत्तर फालगुनी	1
इंद्रचाप	211:02:53	वृशचिक	1:02:53	विशखा	4
व्यथिपात	328:57:06	कुंम्भ	28:57:06	पूर्व भद्रपाढा	3
उपकेतु	227:42:53	वृशचिक	17:42:53	ज्येष्ठ	1
धूम	31:02:53	वृषभ	1:02:53	कृत्तिका	2

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	पूर्व फालगुनी	शुक्र	बुध	चन्द्र
अर्धप्रहर	अनुराधा	शनि	शनि	बुध
मृत्यु	स्वाति	राहु	शनि	रवि
यमकंठक	आर्द्र	राहु	रवि	शुक्र
गुलिक	मघा	केतु	शुक्र	राहु
परिवेष	उत्तर फालगुनी	रवि	मंगल	केतु
इंद्रचाप	विशखा	गुरु	मंगल	बुध
व्यथिपात	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	रवि	राहु
उपकेतु	ज्येष्ठ	बुध	बुध	मंगल
धूम	कृत्तिका	रवि	राहु	चन्द्र

उपग्रह राशी

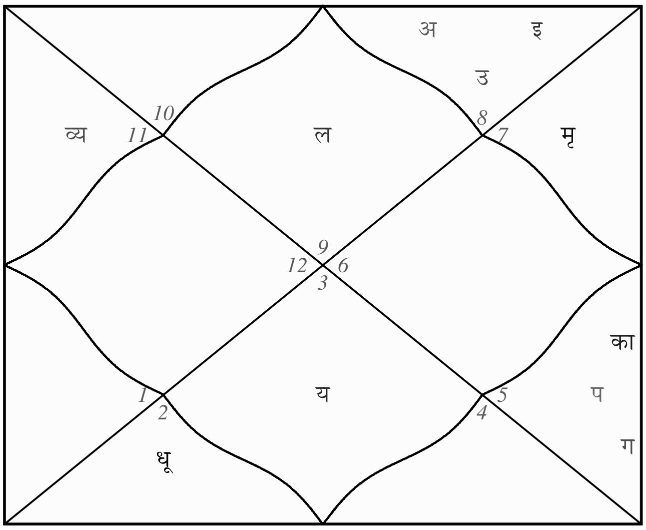

का	उ	काल	अ	उ	अर्धप्रहर
मृ	उ	मृत्यु	य	उ	यमकंठक
ग	उ	गुलिक	प	उ	परिवेष
इ	उ	इंद्रचाप	व्य	उ	व्यथिपात
उ	उ	उपकेतु	धू	उ	धूम

कराकास (जयमिनी सिस्टेम्म)

कारक	गृह	
१ आत्म करक	बुध	करकांसा : मीन
२ अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	रवि	
३ भ्रात्रि (बाई / बहन)	मंगल	
४ मात्रि (माता)	शुक्र	
५ पुत्र (बच्चे)	चन्द्र	
६ ज्ञाति (रिशतेदार)	शनि	
७ दारा (पति या पत्नी)	गुरु	

अरुढ़ /पाढ़ा

कोड	अरुढ़/पाढ़ा	राशी
P 1	लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	धनु
P 2	धन अरुढ़ा	मीन
P 3	विक्रम /मात्रु पाढ़ा	कुंम्भ
P 4	मात्रु/सुख पाढ़ा	कन्या
P 5	मंत्र/पुत्र पाढ़ा	तुला
P 6	रोग/सात्रु पाढ़ा	कर्क
P 7	धर/कलत्रा/स्त्री पाढ़ा	मेष
P 8	मृत्यु/मरण/आयु पाढ़ा	वृशचिक
P 9	पित्रु/भाग्य/धर्म पाढ़ा	मेष
P 10	कर्म/राज्य पाढ़ा	मकर
P 11	लाभ/आय पाढ़ा	कुंम्भ
P 12	व्याय/उपा पाढ़ा	मीन

अरुढ़ चक्र

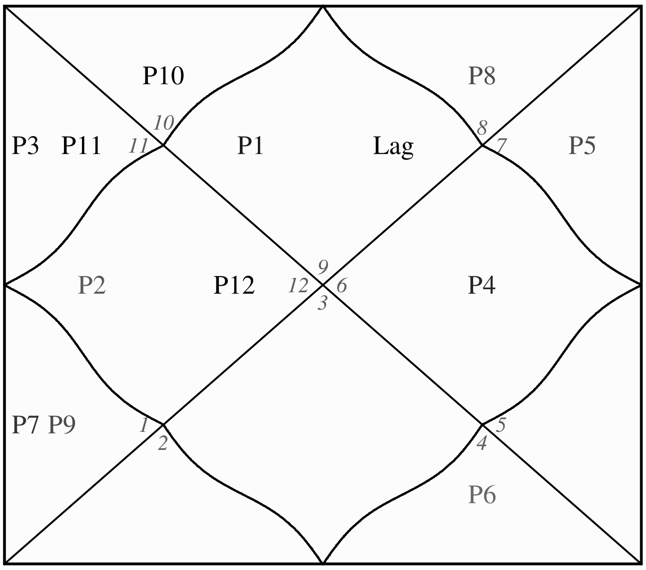

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	9	6 :	9	8 :	9	4 :	3	5	6 :	12	5
औरा	5	4 :	4 :	5	5	5	5	5	5	5	4 :
द्रिख्खन	9	10	1	4 :	1	8 :	3	5	10	4 :	9
चतूर्थांश	12	9	3	5	12	10	3	5	12	6 :	11
सप्तांश	10	2 :	1	8 :	12	1	4 :	6 :	3	9	8 :
नवांश	3	1	6 :	12	4 :	8 :	8 :	2 :	3	9	6 :
दशांश	11	5	2 :	1	1	5	5	7	7	1	10 :
व्दादशांश	12	10	4 :	7	2 :	10	5	7	12	6 :	11
सोडांश	1	3	6 :	7	3	9	12	8 :	6 :	6 :	2 :
विंशाम्स	10	12	4 :	3	1	11	9	1	4 :	4 :	8 :
चतुर्विंशाम्स	11	1	7	2 :	3	4 :	9	10	5	5	6 :
भम्श	7	2 :	4 :	10	12	11	12	6 :	7	1	4 :
त्रिंशाम्स	11	6 :	9	8 :	9	12	11	11	12	12	9
खवेदांश	11	10	12	7	6 :	3	9	9	5	5	11
	8 :	2 :	11	10	4 :	11	6 :	2 :	10	10	6 :
शष्टियांश	12	5	8 :	3	10	10	3	6 :	3	9	3
ओजराशी गणन	10	6	7	8	8	8	11	9	8	8	7

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या
7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	गु	+बु	+गु	=मं	=गु	+चं	~बु	~र	+बु	+गु	र
औरा	र	^चं	+चं	+र	~र	+र	+र	~र	~र	+र	चं
द्रिख्खन	गु	=श	+मं	~चं	=मं	^मं	~बु	~र	+श	=चं	गु
चतूथांश	गु	=गु	=बु	+र	=गु	=श	~बु	~र	~गु	~बु	श
सप्तांश	श	=शु	+मं	=मं	=गु	^मं	+चं	+बु	+बु	+गु	मं
नवांश	बु	=मं	=बु	=गु	~चं	^मं	+मं	+शु	+बु	+गु	बु
दशांश	श	+र	~शु	=मं	=मं	+र	+र	+शु	+शु	+मं	श
व्दादशांश	गु	=श	+चं	+शु	^शु	=श	+र	+शु	~गु	~बु	श
सोडांश	मं	+बु	=बु	+शु	+बु	+गु	^गु	~मं	+बु	~बु	शु
विंशाम्स	श	=गु	+चं	^बु	=मं	=श	^गु	~मं	=चं	=चं	मं
चतुर्विंशाम्स	श	=मं	~शु	+शु	+बु	+चं	^गु	^श	~र	+र	बु
भम्श	शु	=शु	+चं	=श	=गु	=श	^गु	+बु	+शु	+मं	चं
त्रिंशाम्स	श	+बु	+गु	=मं	=गु	+गु	=श	^श	~गु	+गु	गु
खवेदांश	श	=श	+गु	+शु	+बु	~बु	^गु	=गु	~र	+र	श
	मं	=शु	~श	=श	~चं	=श	~बु	+शु	+श	~श	बु
शष्टियांश	गु	+र	+मं	^बु	+श	=श	~बु	+बु	+बु	+गु	बु

^ अपना वर्ग + मित्र = निशपक्षीय ~ शत्रु

वर्गा भेढ

स्वावर्ग और उच्च वर्ग के लिए पोयन्ट्‌ दिया जाता है ।

गृहों	षढ़वर्ग	सप्तवर्गा	दाशवर्ग	षोढ़सवर्ग
चन्द्र	1- ---	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	4-नागपुष्पाम्स
रवि	1- ---	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	2-बीढ़काम्स
बुध	0-	0-	1- ---	2-बीढ़काम्स
शुक्र	1- ---	2-किम्सुकम्स	2-पारिजातांस	4-नागपुष्पाम्स
मंगल	3-व्यजनांमस	4-चामरांस	5-सिंहासनाम्स	6-कीरलाम्स
गुरु	0-	1- ---	2-पारिजातांस	6-कीरलाम्स
शनि	2-किम्सुकम्स	2-किम्सुकम्स	3-उत्तमामस	4-नागपुष्पाम्स

राशी[D1]

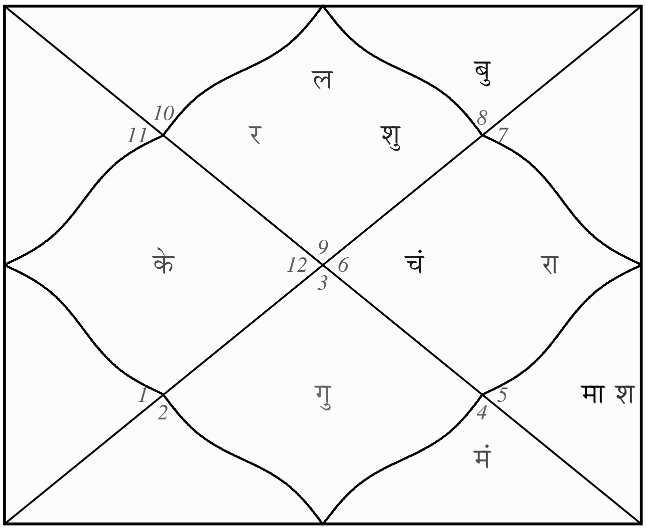

औरा[D2]

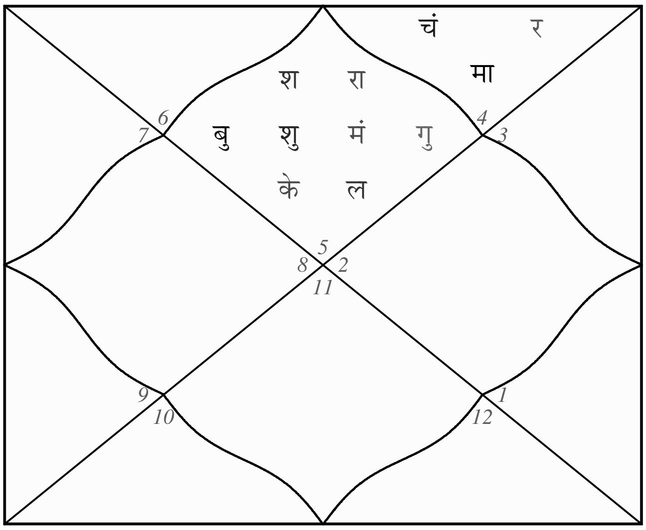

द्रिख्खन[D3]

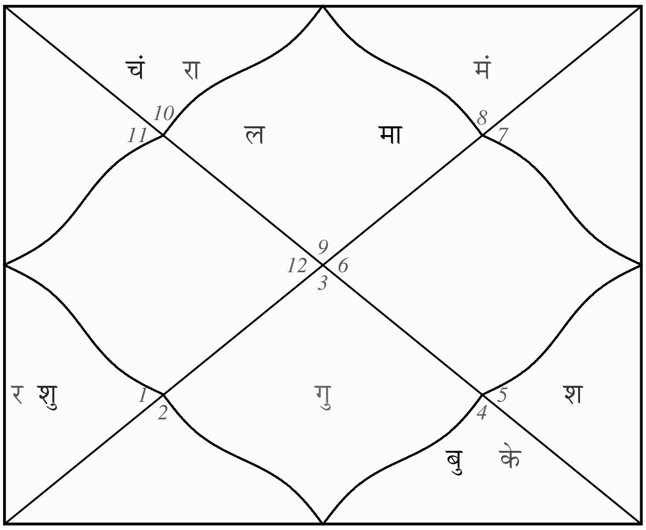

चतूथांश[D4]

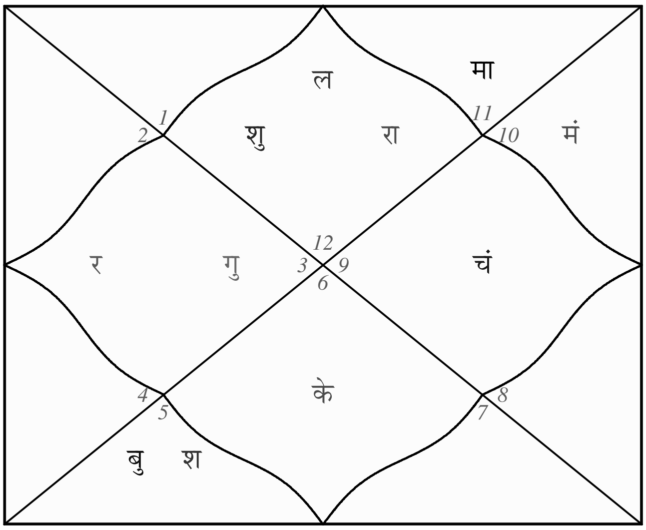

सप्तांश[D7]

नवांश[D9]

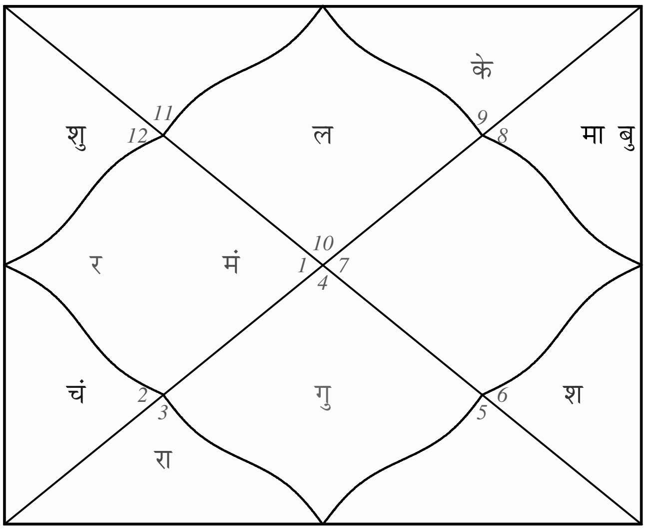

दशांश[D10]

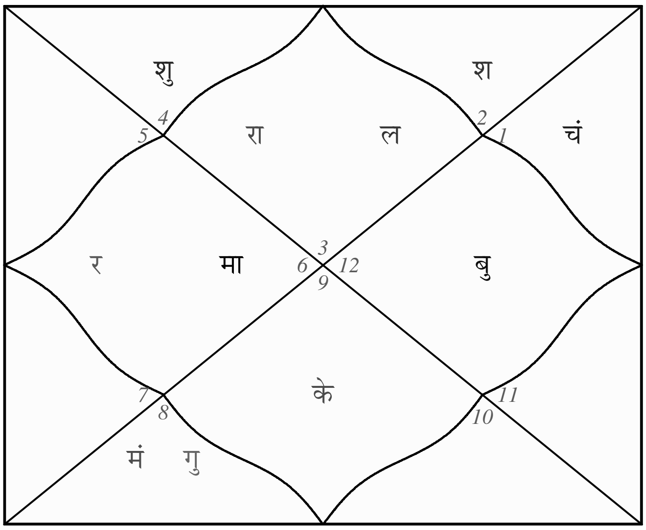

व्दादशांश[D12]

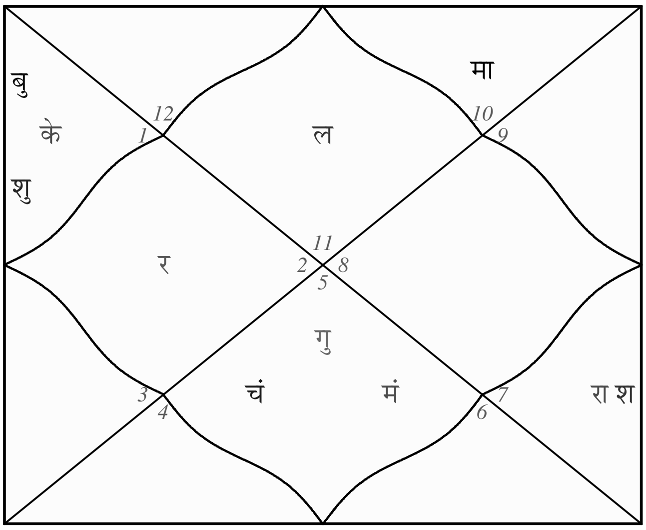

सोडांश[D16]

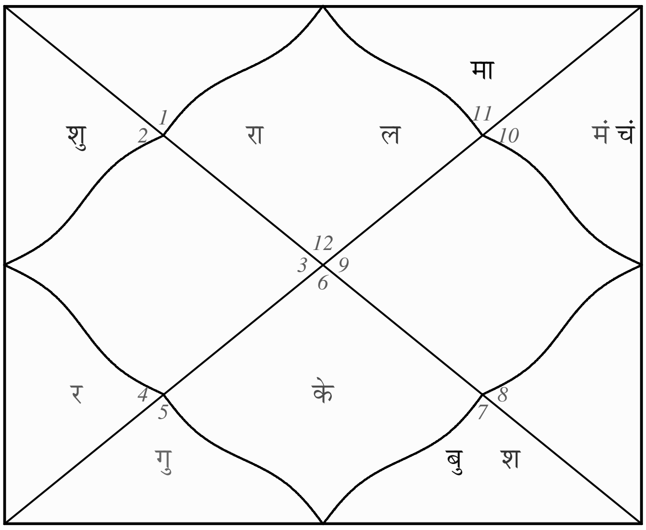

विंशाम्स[D20]

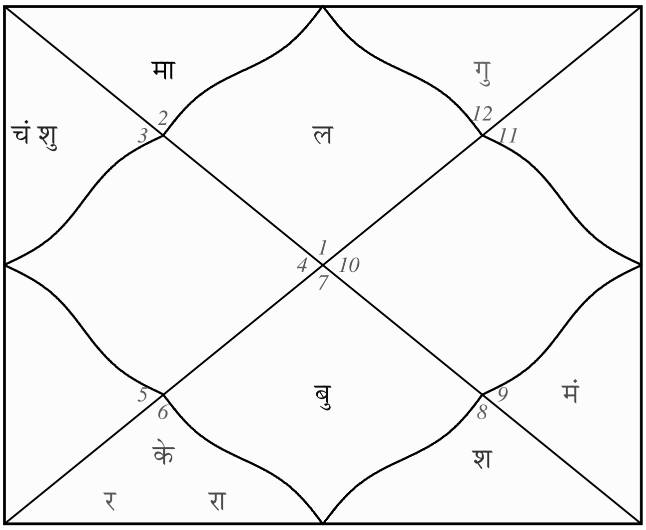

चतुर्विंशाम्स[D24]

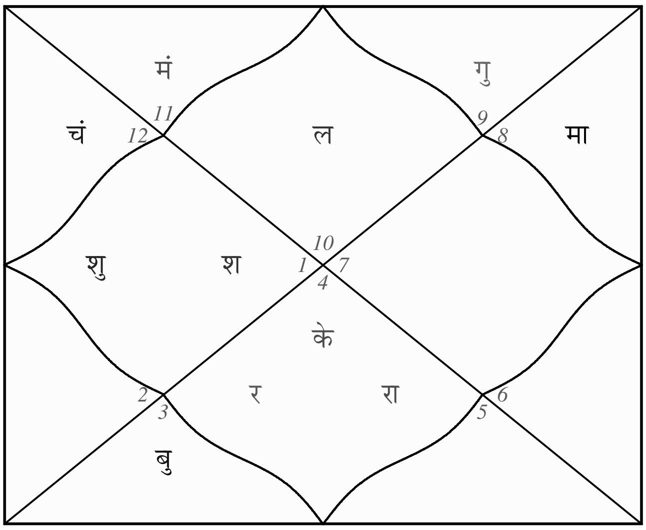

भम्श[D27]

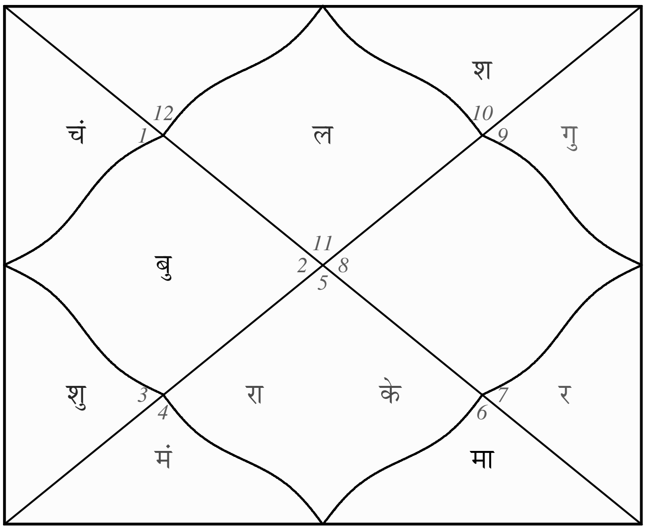

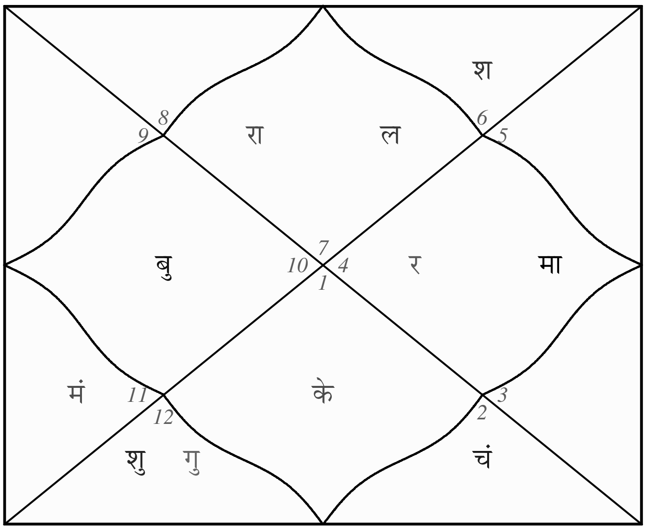

त्रिंशाम्स[D30]

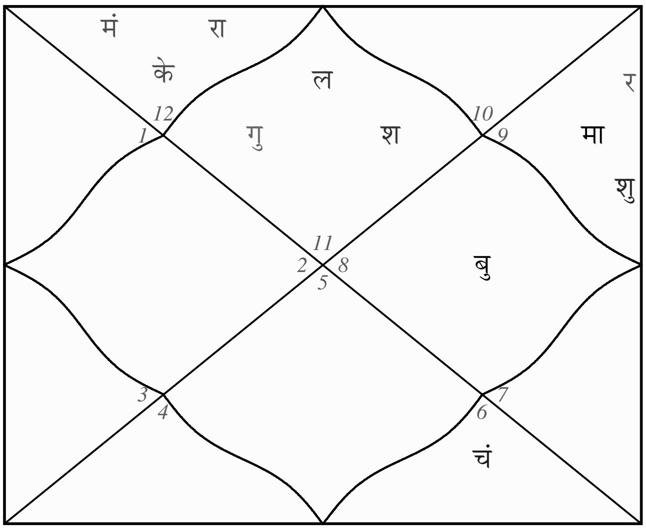

खवेदांश[D40]

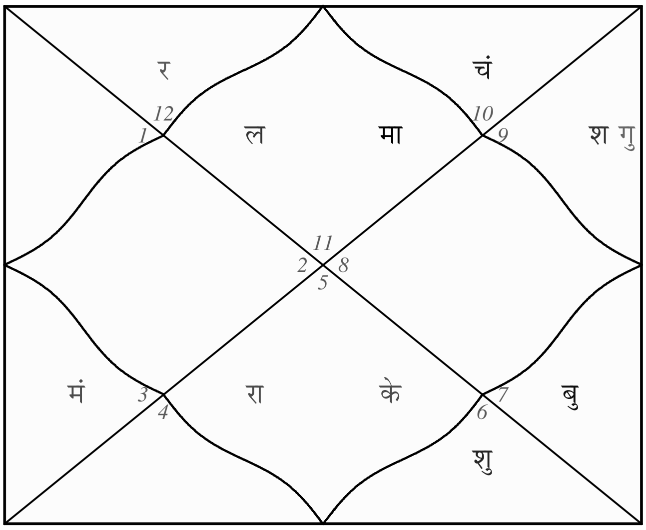

[D45]

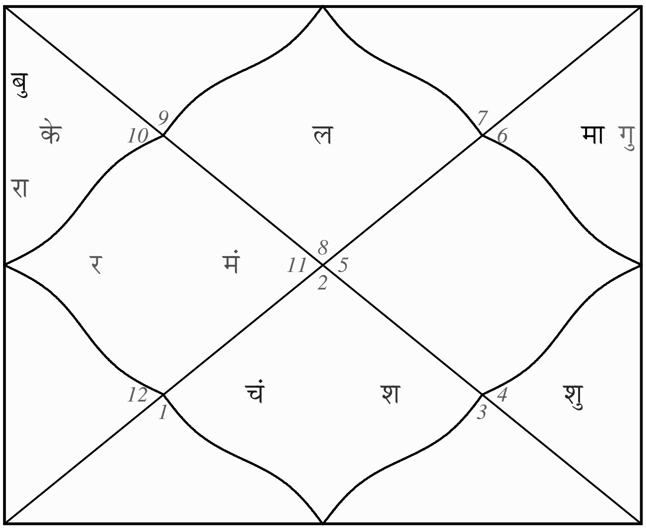

शष्टियांश[D60]

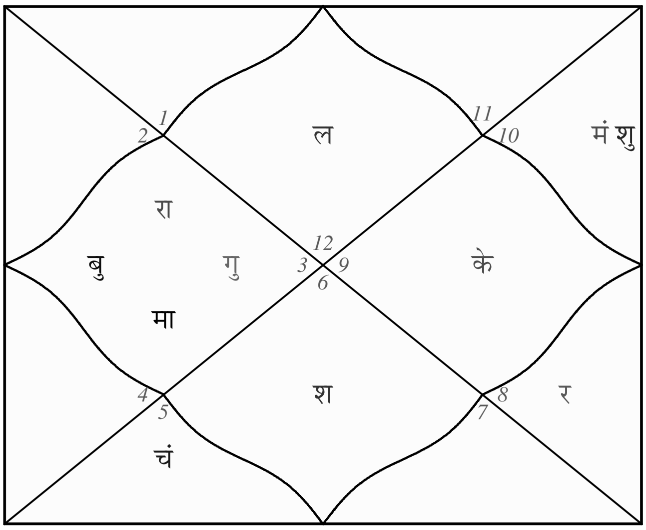

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - चन्द्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष				1	1	1			3
वृषभ		1	1		1	1		1	5
मिथुन	1	1	1	1		1	1		6
कर्क	1	1							2
सिंह			1	1	1				3
कन्या	1	1	1	1	1	1		1	7
तुला		1		1			1	1	4
वृशचिक	1		1		1				3
धनु					1	1	1		3
मकर			1			1	1		3
कुंम्भ	1	1	1	1				1	5
मीन	1		1	1	1	1			5
सभी मिलाकार	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - रवि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष			1		1	1	1		4
वृषभ				1	1		1	1	4
मिथुन	1	1		1			1		4
कर्क	1	1	1		1				4
सिंह		1	1		1		1		4
कन्या		1	1				1	1	4
तुला		1	1		1	1		1	5
वृशचिक	1			1		1	1	1	5
धनु		1							1
मकर		1	1		1				3
कुंम्भ	1				1	1	1	1	5
मीन		1	1		1		1	1	5
सभी मिलाकार	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1	1	1	1	1	1		7
वृषभ		1			1	1	1	1	5
मिथुन	1						1		2
कर्क	1		1	1	1			1	5
सिंह		1	1	1	1		1		5
कन्या			1				1	1	3
तुला	1	1	1	1	1			1	6
वृशचिक		1	1			1	1		4
धनु	1			1				1	3
मकर			1	1	1	1		1	5
कुंम्भ	1			1	1		1		4
मीन			1	1	1		1	1	5
सभी मिलाकार	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1		1	1		1	1	1	6
वृषभ	1				1		1		3
मिथुन					1		1		2
कर्क	1	1	1	1				1	5
सिंह	1			1				1	3
कन्या	1		1	1	1				4
तुला	1	1		1		1	1	1	6
वृशचिक	1	1			1		1		4
धनु	1			1	1		1	1	5
मकर	1		1	1		1		1	5
कुंम्भ				1		1		1	3
मीन			1	1	1	1	1	1	6
सभी मिलाकार	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1	1		1	1	1		5
वृषभ		1		1	1	1	1	1	6
मिथुन							1		1
कर्क	1			1	1				3
सिंह					1		1		2
कन्या		1	1					1	3
तुला		1		1	1			1	4
वृशचिक	1			1		1	1		4
धनु								1	1
मकर			1		1				2
कुंम्भ	1	1			1		1	1	5
मीन			1			1	1		3
सभी मिलाकार	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष			1	1	1	1		1	5
वृषभ	1			1	1			1	4
मिथुन		1				1		1	3
कर्क	1	1	1		1	1	1		6
सिंह		1	1	1	1	1		1	6
कन्या		1	1	1		1		1	5
तुला	1	1		1	1		1	1	6
वृशचिक			1						1
धनु		1	1			1	1	1	5
मकर	1	1		1	1	1	1	1	7
कुंम्भ		1	1		1				3
मीन	1	1	1			1		1	5
सभी मिलाकार	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तारा अष्ठगवर्ग - शनि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष			1		1	1			3
वृषभ				1	1	1		1	4
मिथुन		1	1		1		1		4
कर्क	1	1	1						3
सिंह			1						1
कन्या		1	1		1			1	4
तुला		1	1	1		1	1	1	6
वृशचिक	1			1	1	1			4
धनु		1			1		1	1	4
मकर		1					1		2
कुंम्भ	1							1	2
मीन		1						1	2
सभी मिलाकार	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	3	4	7	6	5	5	3	33
वृषभ	5	4	5	3	6	4	4	31
मिथुन	6	4	2	2	1	3	4	22
कर्क	2	4	5	5	3	6	3	28
सिंह	3	4	5	3	2	6	1	24
कन्या	7	4	3	4	3	5	4	30
तुला	4	5	6	6	4	6	6	37
वृशचिक	3	5	4	4	4	1	4	25
धनु	3	1	3	5	1	5	4	22
मकर	3	3	5	5	2	7	2	27
कुंम्भ	5	5	4	3	5	3	2	27
मीन	5	5	5	6	3	5	2	31
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चन्द्र अष्टकवर्ग 49

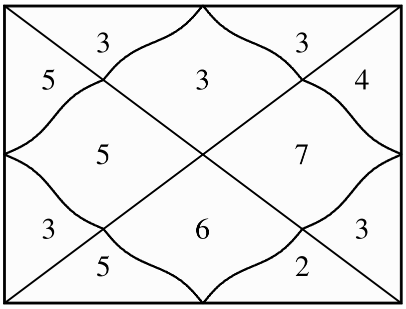

रवि अष्टकवर्ग 48

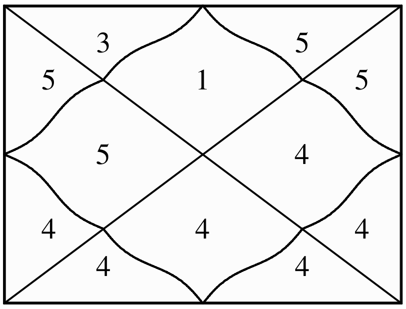

बुध अष्टकवर्ग 54

शुक्र अष्टकवर्ग 52

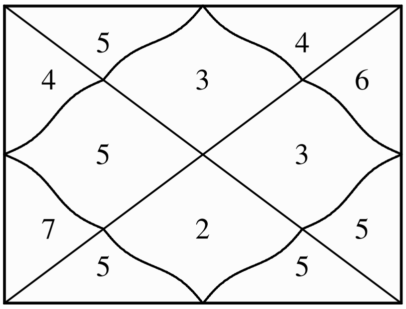

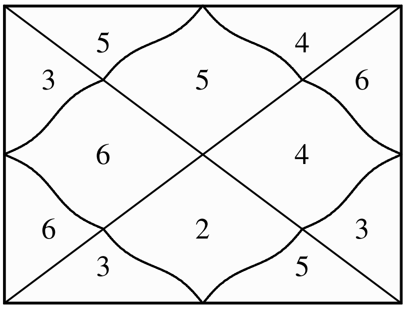

मंगल अष्टकवर्ग 39

गुरु अष्टकवर्ग 56

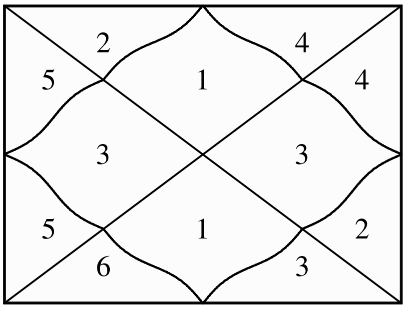

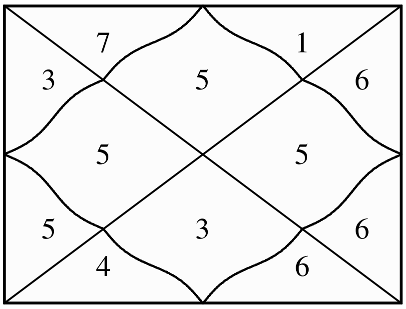

शनि अष्टकवर्ग 39

सर्व अष्टकवर्ग 337

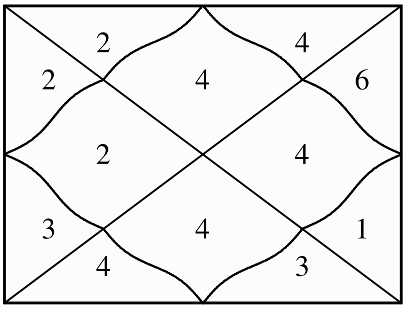

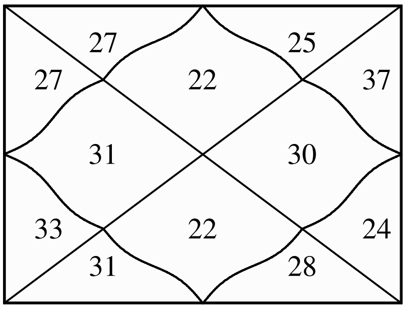

अष्टकवर्ग - त्रिकोण कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

रवि अष्टकवर्ग 12

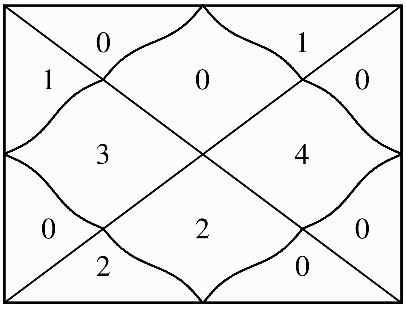

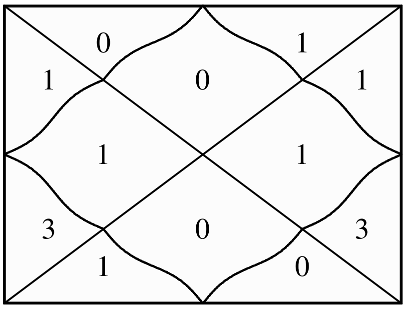

बुध अष्टकवर्ग 18

शुक्र अष्टकवर्ग 16

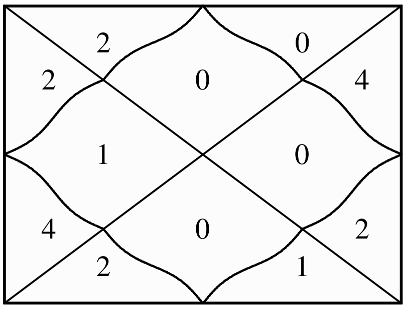

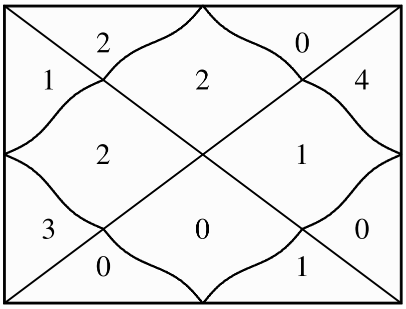

मंगल अष्टकवर्ग 18

गुरु अष्टकवर्ग 17

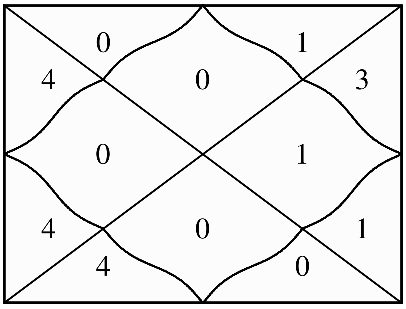

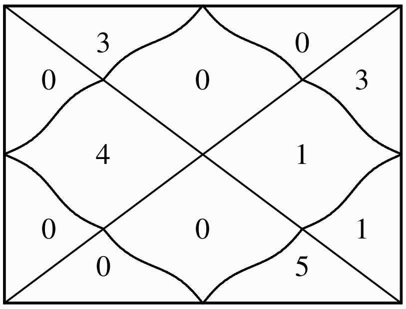

शनि अष्टकवर्ग 18

सर्व अष्टकवर्ग 112

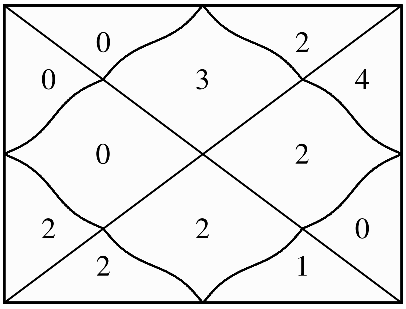

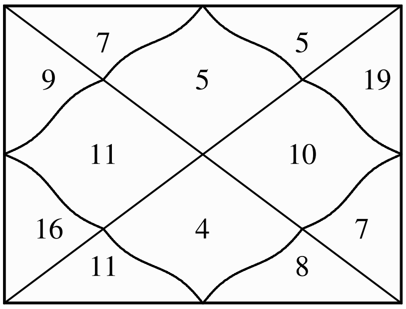

अष्टकवर्ग - एकाधिपती कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

रवि अष्टकवर्ग 8

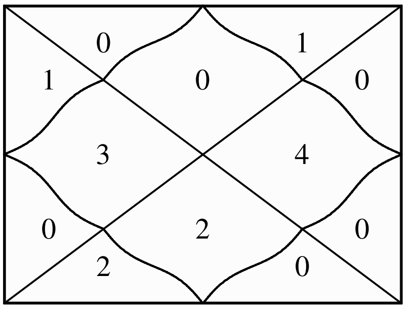

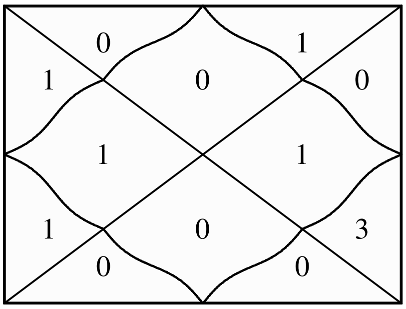

बुध अष्टकवर्ग 12

शुक्र अष्टकवर्ग 13

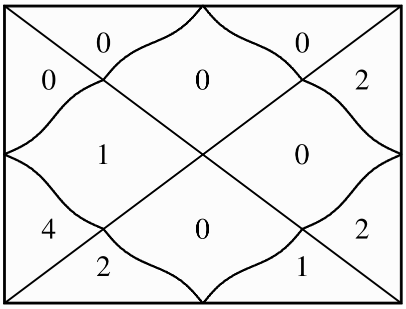

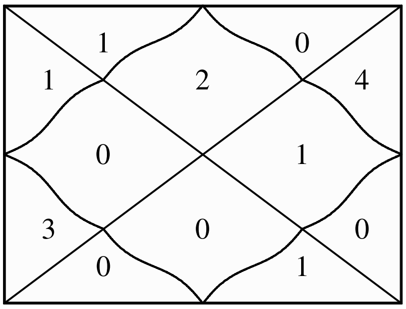

मंगल अष्टकवर्ग 14

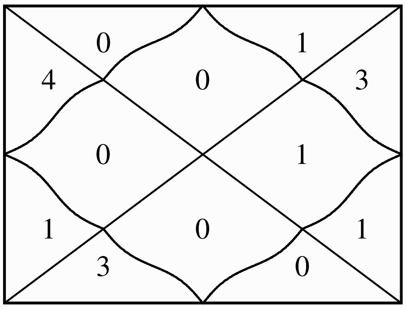

गुरु अष्टकवर्ग 17

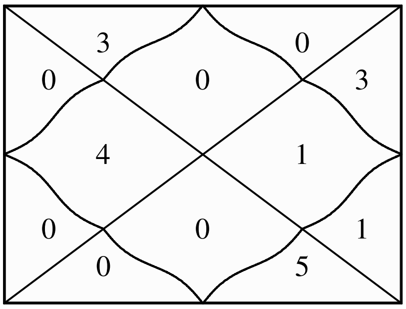

शनि अष्टकवर्ग 14

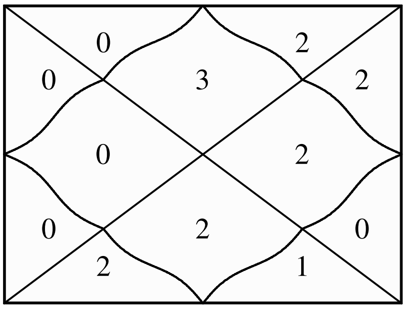

सर्व अष्टकवर्ग 91

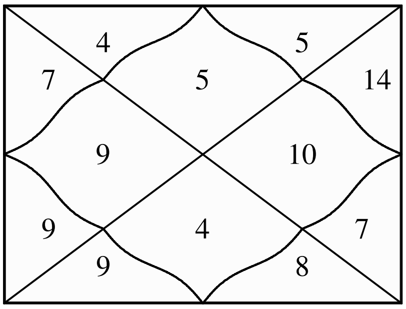

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

प्डुङ्घ्म्ण्फ दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD) मंगलउ08:07:26 राहुउ15:07:26 गुरुऊ 33:07:26 शनिउ49:07:26 बुधउ68:07:26 केतुउ85:07:26 शुक्रउ92:07:26

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल उ ३६५.२५ दिन)

जन्म के समय दशा की समतुलना = चन्द्र 8 साल, 7 महीने, 26 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
चं	मं	02-01-1978	27-01-1978
‘	रा	27-01-1978	29-07-1979
‘	गु	29-07-1979	27-11-1980
‘	श	27-11-1980	29-06-1982
‘	बु	29-06-1982	28-11-1983
‘	के	28-11-1983	28-06-1984
‘	शु	28-06-1984	27-02-1986
‘	र	27-02-1986	29-08-1986

मं	मं	29-08-1986	25-01-1987
‘	रा	25-01-1987	12-02-1988
‘	गु	12-02-1988	18-01-1989
‘	श	18-01-1989	27-02-1990
‘	बु	27-02-1990	24-02-1991
‘	के	24-02-1991	23-07-1991
‘	शु	23-07-1991	21-09-1992
‘	र	21-09-1992	27-01-1993
‘	चं	27-01-1993	28-08-1993
रा	रा	28-08-1993	10-05-1996
‘	गु	10-05-1996	04-10-1998
‘	श	04-10-1998	10-08-2001
‘	बु	10-08-2001	27-02-2004
‘	के	27-02-2004	17-03-2005
‘	शु	17-03-2005	17-03-2008
‘	र	17-03-2008	08-02-2009
‘	चं	08-02-2009	10-08-2010
‘	मं	10-08-2010	29-08-2011
गु	गु	29-08-2011	16-10-2013
‘	श	16-10-2013	28-04-2016
‘	बु	28-04-2016	04-08-2018
‘	के	04-08-2018	11-07-2019
‘	शु	11-07-2019	11-03-2022
‘	र	11-03-2022	28-12-2022
‘	चं	28-12-2022	28-04-2024
‘	मं	28-04-2024	04-04-2025
‘	रा	04-04-2025	29-08-2027
श	श	29-08-2027	01-09-2030
‘	बु	01-09-2030	11-05-2033
‘	के	11-05-2033	20-06-2034
‘	शु	20-06-2034	19-08-2037
‘	र	19-08-2037	01-08-2038
‘	चं	01-08-2038	01-03-2040
‘	मं	01-03-2040	10-04-2041
‘	रा	10-04-2041	15-02-2044
‘	गु	15-02-2044	29-08-2046
बु	बु	29-08-2046	24-01-2049
‘	के	24-01-2049	21-01-2050
‘	शु	21-01-2050	21-11-2052
‘	र	21-11-2052	28-09-2053
‘	चं	28-09-2053	27-02-2055
‘	मं	27-02-2055	24-02-2056
‘	रा	24-02-2056	13-09-2058
‘	गु	13-09-2058	19-12-2060

‘	श	19-12-2060	29-08-2063
के	के	29-08-2063	25-01-2064
‘	शु	25-01-2064	26-03-2065
‘	र	26-03-2065	01-08-2065
‘	चं	01-08-2065	02-03-2066
‘	मं	02-03-2066	29-07-2066
‘	रा	29-07-2066	17-08-2067
‘	गु	17-08-2067	23-07-2068
‘	श	23-07-2068	31-08-2069
‘	बु	31-08-2069	29-08-2070
शु	शु	29-08-2070	28-12-2073
‘	र	28-12-2073	28-12-2074
‘	चं	28-12-2074	28-08-2076
‘	मं	28-08-2076	28-10-2077
‘	रा	28-10-2077	28-10-2080
‘	गु	28-10-2080	29-06-2083
‘	श	29-06-2083	29-08-2086
‘	बु	29-08-2086	28-06-2089
‘	के	28-06-2089	29-08-2090

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : राहु   अपहार : चन्द्र

1.चं 08-02-2009 >> 26-03-2009   **2.मं** 26-03-2009 >> 27-04-2009
3.रा 27-04-2009 >> 18-07-2009   **4.गु** 18-07-2009 >> 29-09-2009
5.श 29-09-2009 >> 25-12-2009   **6.बु** 25-12-2009 >> 13-03-2010
7.के 13-03-2010 >> 14-04-2010   **8.शु** 14-04-2010 >> 14-07-2010
9.र 14-07-2010 >> 10-08-2010

दशा : राहु   अपहार : मंगल

1.मं 10-08-2010 >> 02-09-2010   **2.रा** 02-09-2010 >> 29-10-2010
3.गु 29-10-2010 >> 19-12-2010   **4.श** 19-12-2010 >> 18-02-2011
5.बु 18-02-2011 >> 13-04-2011   **6.के** 13-04-2011 >> 06-05-2011
7.शु 06-05-2011 >> 09-07-2011   **8.र** 09-07-2011 >> 28-07-2011
9.चं 28-07-2011 >> 29-08-2011

दशा : गुरु   अपहार : गुरु

1.गु 29-08-2011 >> 11-12-2011   **2.श** 11-12-2011 >> 12-04-2012
3.बु 12-04-2012 >> 31-07-2012   **4.के** 31-07-2012 >> 15-09-2012
5.शु 15-09-2012 >> 23-01-2013   **6.र** 23-01-2013 >> 03-03-2013
7.चं 03-03-2013 >> 07-05-2013   **8.मं** 07-05-2013 >> 21-06-2013
9.रा 21-06-2013 >> 16-10-2013

दशा : गुरु **अपहार : शनि**

1.श	16-10-2013	>>	12-03-2014	**2.बु**	12-03-2014	>>	21-07-2014
3.के	21-07-2014	>>	13-09-2014	**4.शु**	13-09-2014	>>	14-02-2015
5.र	14-02-2015	>>	01-04-2015	**6.चं**	01-04-2015	>>	17-06-2015
7.मं	17-06-2015	>>	10-08-2015	**8.रा**	10-08-2015	>>	27-12-2015
9.गु	27-12-2015	>>	28-04-2016				

दशा : गुरु **अपहार : बुध**

1.बु	28-04-2016	>>	24-08-2016	**2.के**	24-08-2016	>>	11-10-2016
3.शु	11-10-2016	>>	26-02-2017	**4.र**	26-02-2017	>>	08-04-2017
5.चं	08-04-2017	>>	16-06-2017	**6.मं**	16-06-2017	>>	04-08-2017
7.रा	04-08-2017	>>	06-12-2017	**8.गु**	06-12-2017	>>	26-03-2018
9.श	26-03-2018	>>	04-08-2018				

दशा : गुरु **अपहार : केतु**

1.के	04-08-2018	>>	24-08-2018	**2.शु**	24-08-2018	>>	20-10-2018
3.र	20-10-2018	>>	06-11-2018	**4.चं**	06-11-2018	>>	04-12-2018
5.मं	04-12-2018	>>	24-12-2018	**6.रा**	24-12-2018	>>	13-02-2019
7.गु	13-02-2019	>>	31-03-2019	**8.श**	31-03-2019	>>	24-05-2019
9.बु	24-05-2019	>>	11-07-2019				

दशा : गुरु **अपहार : शुक्र**

1.शु	11-07-2019	>>	20-12-2019	**2.र**	20-12-2019	>>	07-02-2020
3.चं	07-02-2020	>>	28-04-2020	**4.मं**	28-04-2020	>>	24-06-2020
5.रा	24-06-2020	>>	17-11-2020	**6.गु**	17-11-2020	>>	27-03-2021
7.श	27-03-2021	>>	28-08-2021	**8.बु**	28-08-2021	>>	13-01-2022
9.के	13-01-2022	>>	11-03-2022				

दशा : गुरु **अपहार : रवि**

1.र	11-03-2022	>>	26-03-2022	**2.चं**	26-03-2022	>>	19-04-2022
3.मं	19-04-2022	>>	06-05-2022	**4.रा**	06-05-2022	>>	19-06-2022
5.गु	19-06-2022	>>	28-07-2022	**6.श**	28-07-2022	>>	12-09-2022
7.बु	12-09-2022	>>	24-10-2022	**8.के**	24-10-2022	>>	10-11-2022
9.शु	10-11-2022	>>	28-12-2022				

दशा : गुरु **अपहार : चन्द्र**

1.चं	28-12-2022	>>	07-02-2023	**2.मं**	07-02-2023	>>	07-03-2023
3.रा	07-03-2023	>>	19-05-2023	**4.गु**	19-05-2023	>>	23-07-2023
5.श	23-07-2023	>>	08-10-2023	**6.बु**	08-10-2023	>>	16-12-2023
7.के	16-12-2023	>>	14-01-2024	**8.शु**	14-01-2024	>>	04-04-2024
9.र	04-04-2024	>>	28-04-2024				

दशा : गुरु अपहार : मंगल

1.मं	28-04-2024 >> 18-05-2024	**2.रा**	18-05-2024 >> 08-07-2024
3.गु	08-07-2024 >> 23-08-2024	**4.श**	23-08-2024 >> 16-10-2024
5.बु	16-10-2024 >> 03-12-2024	**6.के**	03-12-2024 >> 23-12-2024
7.शु	23-12-2024 >> 18-02-2025	**8.र**	18-02-2025 >> 07-03-2025
9.चं	07-03-2025 >> 04-04-2025		

दशा : गुरु अपहार : राहु

1.रा	04-04-2025 >> 14-08-2025	**2.गु**	14-08-2025 >> 09-12-2025
3.श	09-12-2025 >> 26-04-2026	**4.बु**	26-04-2026 >> 29-08-2026
5.के	29-08-2026 >> 19-10-2026	**6.शु**	19-10-2026 >> 14-03-2027
7.र	14-03-2027 >> 27-04-2027	**8.चं**	27-04-2027 >> 09-07-2027
9.मं	09-07-2027 >> 29-08-2027		

दशा : शनि अपहार : शनि

1.श	29-08-2027 >> 19-02-2028	**2.बु**	19-02-2028 >> 23-07-2028
3.के	23-07-2028 >> 26-09-2028	**4.शु**	26-09-2028 >> 28-03-2029
5.र	28-03-2029 >> 22-05-2029	**6.चं**	22-05-2029 >> 21-08-2029
7.मं	21-08-2029 >> 24-10-2029	**8.रा**	24-10-2029 >> 07-04-2030
9.गु	07-04-2030 >> 01-09-2030		

दशा : शनि अपहार : बुध

1.बु	01-09-2030 >> 18-01-2031	**2.के**	18-01-2031 >> 16-03-2031
3.शु	16-03-2031 >> 27-08-2031	**4.र**	27-08-2031 >> 15-10-2031
5.चं	15-10-2031 >> 05-01-2032	**6.मं**	05-01-2032 >> 03-03-2032
7.रा	03-03-2032 >> 28-07-2032	**8.गु**	28-07-2032 >> 06-12-2032
9.श	06-12-2032 >> 11-05-2033		

दशा : शनि अपहार : केतु

1.के	11-05-2033 >> 03-06-2033	**2.शु**	03-06-2033 >> 10-08-2033
3.र	10-08-2033 >> 30-08-2033	**4.चं**	30-08-2033 >> 03-10-2033
5.मं	03-10-2033 >> 26-10-2033	**6.रा**	26-10-2033 >> 26-12-2033
7.गु	26-12-2033 >> 18-02-2034	**8.श**	18-02-2034 >> 23-04-2034
9.बु	23-04-2034 >> 20-06-2034		

दशा : शनि अपहार : शुक्र

1.शु	20-06-2034 >> 29-12-2034	**2.र**	29-12-2034 >> 25-02-2035
3.चं	25-02-2035 >> 02-06-2035	**4.मं**	02-06-2035 >> 08-08-2035
5.रा	08-08-2035 >> 29-01-2036	**6.गु**	29-01-2036 >> 01-07-2036
7.श	01-07-2036 >> 31-12-2036	**8.बु**	31-12-2036 >> 13-06-2037
9.के	13-06-2037 >> 19-08-2037		

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: गुरु
दूसरा	,,	(पनप्र)	: शनि
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: शनि
चौथा	,,	(केन्द्र)	: गुरु
पंचम	,,	(त्रिकोण)	: मंगल
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: शुक्र
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: बुध
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: चन्द्र
नवमा	,,	(त्रिकोण)	: रवि
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: बुध
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: शुक्र
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: मंगल

गृहों का योग

चन्द्र प्रभावित होता है राहु
रवि प्रभावित होता है शुक्र लग्न
शुक्र प्रभावित होता है रवि लग्न

एक गृह से दूसरे गृह की अपेक्षा से

चन्द्र अपेक्षित केतु
रवि अपेक्षित गुरु
शुक्र अपेक्षित गुरु
गुरु अपेक्षित रवि शुक्र लग्न

गृह और उसके स्थान की अपेक्षा से

चन्द्र अपेक्षा से चौथा
रवि अपेक्षा से सातवँ
बुध अपेक्षा से छठ्ठा
शुक्र अपेक्षा से सातवँ
मंगल अपेक्षा से दूसरा तिसरा अग्यारवाँ
गुरु अपेक्षा से प्रथम तिसरा अग्यारवाँ
शनि अपेक्षा से तिसरा छठ्ठा अग्यारवाँ

लाभदाई और अपशकुनिय गृहों से

गुरु, शुक्र और चंन्द्र नैसर्गीक पक्षबल के लाभदाई होते हैंशुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल उपलब्ध रहतै है

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र, पक्षबल रहित है और वह अमंगल कारी प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है

बुध जब अमंगल तत्वों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अमंगल और उद्वेग उत्पन्न करने वाला गृह हो जाता है

लेकिन आपकी कुडली में बुध अशुभ गृहों से संगति नहि करता

चन्द्र	-	अशुभकर्ता
रवि	-	अशुभकर्ता
बुध	-	शुभदाई
शुक्र	-	शुभदाई
मंगल	-	अशुभकर्ता
गुरु	-	शुभदाई
शनि	-	अशुभकर्ता
राहु	-	अशुभकर्ता
केतु	-	अशुभकर्ता

अशुभ और शुभ फल निरूपण

गृहों से उत्पन्न होने वाले शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडलि के स्थानिक स्वामी पर रहतै है। अलग अलग स्थान पर उसका अलग प्रभाव रहता है।

कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा लाभदाई और मंगलमय रहता है।

साधारण दृष्टी से अशुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदाई और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, कुंडली के स्थानीय स्वामी निष्पक्ष प्रकार के या शुभ-अशुभ दोनों से भिन्न प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी गृह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को स्वीकार करते हैं। उनके समूल प्रत्याधात और प्रभाव को सुश्मता से देखना पडता है।

शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान का निरुपण कुंडली के अन्य संथानों पर रहे गृह स्वामी के विश्लेषण पर अधारित है।

गृह	स्वामीत्व	स्वभाव
चन्द्र	8	निश्पक्षीय
रवि	9	शुभदाई
बुध	7 10	अशुभकर्ता
शुक्र	6 11	अशुभकर्ता
मंगल	5 12	शुभदाई
गुरु	1 4	निश्पक्षीय
शनि	2 3	अशुभकर्ता

नैसर्गीक स्थाई मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
र	बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
शु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष
गु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष
श	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...

तात्कालिक मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु
र	बन्धु	...	बन्धु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
बु	बन्धु	बन्धु	...	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
शु	बन्धु	शत्रु	बन्धु	...	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मं	बन्धु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...	बन्धु	बन्धु
गु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु
श	बन्धु	शत्रु	बन्धु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	...

पंचदा मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	अति बन्धु	अति बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु
र	अति बन्धु	...	बन्धु	अति शत्रु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	अति शत्रु
बु	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	अति बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
शु	निश्पक्ष	अति शत्रु	अति बन्धु	...	शत्रु	शत्रु	निश्पक्ष
मं	अति बन्धु	निश्पक्ष	अति शत्रु	शत्रु	...	अति बन्धु	बन्धु
गु	अति बन्धु	निश्पक्ष	अति शत्रु	अति शत्रु	अति बन्धु	...	बन्धु
श	निश्पक्ष	अति शत्रु	अति बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु	...

शक्तीबल बतानेवाली नामावली शष्टी अंश के आधारपर (दृकबल)

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से अपेक्षित दृष्य गृह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
बुध	7.95	.	.	.	36.22	55.76	25.56
शुक्र	15.55	.	.	.	43.82	46.57	33.16
गुरु	42.19	54.23	43.03	56.64	4.53	.	15.40
शुभ बल	65.68	54.23	43.03	56.64	84.58	102.32	74.11
अशुभ दृष्टी							
चन्द्र	.	-42.04	-30.89	-44.45	.	-17.81	.
रवि	-17.96	.	.	.	-46.24	-36.91	-35.57
मंगल	-13.28	-4.95	-17.56	-2.35	.	.	.
शनि	-2.61	-18.86	-34.44	-23.68	.	-0.20 -45.00	.
अशुभ शक्ती	-33.85	-65.84	-82.89	-70.49	-46.24	-99.92	-35.57
दृष्टी पींड	31.83	-11.62	-39.86	-13.85	38.34	2.40	38.54
द्रिक बल	7.96	-2.90	-9.97	-3.46	9.59	0.60	9.64

षड्बल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल							
	17.07	22.57	35.77	25.30	4.25	50.39	35.52
सप्तवर्गज बल							
	135.00	90.00	67.50	54.38	157.50	78.75	73.13
ओजयुग्मरस्यांश बल							
	15.00	15.00	0	15.00	0	15.00	15.00
केन्द्र बल							
	60.00	60.00	15.00	60.00	30.00	60.00	15.00
द्रिखान बल							
	0	0	0	0	0	15.00	0
संयुक्तस्थान बल							
	227.07	187.57	118.27	154.67	191.75	219.14	138.65
संयुक्त दिगबल							
	0.44	28.47	56.69	29.92	40.70	0.48	40.34
नतोन्नत बल							
	32.04	27.96	60.00	27.96	32.04	27.96	32.04
पक्षबल							
	56.05	28.03	31.97	31.97	28.03	31.97	28.03
त्रिभाग बल							
	60.00	0	0	0	0	60.00	0
अब्द बल							
	0	0	0	0	0	15.00	0
मास बल							
	0	0	30.00	0	0	0	0
वर बल							
	0	45.00	0	0	0	0	0
होल बल							
	0	0	60.00	0	0	0	0
आयान बल							
	32.69	1.63	59.37	0.46	52.91	59.98	15.41
युध्ध बल							
	0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल							
	180.78	102.61	241.34	60.40	112.98	194.91	75.48
संयुक्त चेष्टाबल							
	0	0	43.18	2.45	54.78	56.12	45.33
संयुक्त नैसर्गीक बल							
	51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल							
	7.96	-2.90	-9.97	-3.46	9.59	0.60	9.64
संपूर्ण षड्बल							
	467.68	375.75	475.22	286.83	426.94	505.53	318.01

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल							
	467.68	375.75	475.22	286.83	426.94	505.53	318.01
संपूर्ण शडबल (रूप)							
	7.79	6.26	7.92	4.78	7.12	8.43	5.30
मौलीक ज़रूरतें							
	6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात							
	1.30	1.25	1.13	0.87	1.42	1.30	1.06
संबन्धी स्थानक							
	2	4	5	7	1	3	6

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	23.36	9.21	39.30	7.87	15.26	53.18	40.13
कष्टफल	34.69	45.88	20.19	44.69	17.06	6.11	18.95

भावापेक्षीत बलवंत स्थिती की यादी (नामावली) शष्टीआंशमें

बुध गृह का प्रकृति संयोग से निश्चित किया जाता है ।

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से   भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चन्द्र											
10.20	7.79	0.13	14.83	11.31	7.79	4.27	0.29	.	.	.	3.46
बुध											
.	5.88	28.60	37.28	16.40	23.52	55.04	39.12	23.20	7.28	.	.
शुक्र											
.	.	3.55	11.22	7.70	0.86	12.36	11.68	7.70	3.72	0.20	.
गुरु											
59.28	43.36	27.44 30.00	11.52	.	.	.	1.64	20.11	41.52	24.89 30.00	6.55

शुभ बल

69.49	57.04	89.72	74.85	35.41	32.18	71.67	52.73	51.01	52.52	55.09	10.00

अशुभ दृष्टी

रवि

.	.	-2.95	-10.10	-8.30	-2.07	-9.95	-12.28	-8.30	-4.32	-0.80	.

मंगल

-1.91	-12.10	-11.74	-7.76 -3.75	-4.24	-0.72	.	.	.	-3.49	-10.26	-8.22 -3.75

शनि

-7.24	-1.44	-14.41	-10.43	-6.91	-3.39 -11.25	.	.	.	-0.82	-4.93 -11.25	-10.89

अशुभ शक्ती

-9.15	-13.54	-29.10	-32.05	-19.46	-17.43	-9.95	-12.28	-8.30	-8.63	-27.24	-22.87

दृष्टी पींड / द्रिक बल

60.34	43.50	60.62	42.81	15.95	14.74	61.73	40.45	42.71	43.89	27.84	-12.86

भावबल की यादी

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल	505.53	318.01	318.01	505.53	426.94	286.83	475.22	467.68	375.75	475.22	286.83	426.94
भावद्रिगबल	60.00	20.00	40.00	60.00	10.00	20.00	0	20.00	50.00	30.00	40.00	10.00
भावद्रिष्टीबल	60.34	43.50	60.62	42.81	15.95	14.74	61.73	40.45	42.71	43.89	27.84	-12.86
संपूर्ण भावबल	625.86	381.51	418.63	608.33	452.89	321.57	536.95	528.13	468.46	549.11	354.67	424.08
भावबल के रुप	10.43	6.36	6.98	10.14	7.55	5.36	8.95	8.80	7.81	9.15	5.91	7.07
संबन्धी स्थानक	1	10	9	2	7	12	4	5	6	3	11	8

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रृष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में आठवाँ स्थानपर रहा है।

यह स्थिती दोषपूर्ण है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है। सूर्य की अपेक्षा से बारह रेखांश से चन्द्र सत्रह रेखांश से मंगल, तेरह रेखांश से बुध, अग्यारह रेखांश से गुरु, नव रेखांश से शुक्र और पंद्रह रेखांश से शनी मौढ्य स्थिती में माना जाता है।

शुक्र मौढ्य दशा में रहा है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					वृदावस्था
र					युवावस्था
बु					बालावस्था
शु		सयहोग			युवावस्था
मं	क्षीण परिस्थिती			विपरीत परिस्थिती	युवावस्था
गु				विपरीत परिस्थिती	कुमारावस्था
श				विपरीत परिस्थिती	कुमारावस्था

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। जबकि दूसरे कुछ योग जो हैं वह गृहों के खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में खास स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होता है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

नीचभंगराज योग

लक्षण :
मंगल क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है
दुर्बल भाव का अधिपति लग्न केन्द्र में है ।
दुर्बल राशी में जो गृह आनन्द पूर्ण है, चन्द्र केन्द्र में उपस्थित है ।
दुर्बल राशी में जो गृह आनन्द पूर्ण है, लग्न केन्द्र में उपस्थित है ।

आप अतिभाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

राज योग

लक्षण :

इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई पडता है ।
आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

अनभयोग

लक्षण : सूर्य के अतिरिक्त कोई भी गृह चन्द्र से बारहवे स्थान पर रहा है।

अनभा योग तब होता है जब चन्द्र के बारहवें भाव में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि अकेले या एक साथ होते हैं। अनभा योग व्यक्ति को धनी एंव सुखी बनाता है। उसे चरित्रवान भी बनाता हैं। उसका शरीर सुन्दर, बल और पौरुष प्रकट करने वाला होता है। यह योग आपको विनम्र व व्यवहार कुशल बनायेगा। आप भाग्यशाली हैं और सफलता सुनिश्चित है। अपने लिए और पत्नी के लिए विशेष वस्त्रों की आप अभिरुचि रखते हैं जो दूसरे लोगों में नहीं देखा जाता। आप में विनय और आदरभाव स्थायी रूप से बने रहेंगे। विनय और करुणा आप के हर कार्य में प्रकट होते हैं। आप प्रशंसा के पात्र बनेंगे।

गज़केसरी योग

लक्षण : चन्द्र से लेकर गुरु ने केन्द्रस्थान प्राप्त किया है।

बृहस्पति चन्द्र से केन्द्र स्थान पर होने से गजकेसरी योग होता है। ज्योतिशास्त्र के अनुसार केसरीयोग में जन्म पानेवाले व्यक्ति भाग्यवान माने जाते हैं। वे धनी, ऐश्वर्यवान, विजयी होते हैं। केसरियोग अन्य बुरे योगों का प्रभाव, जैसे केमद्रुम आदि को नष्ट करता है। आप सामान्यतः एक दीर्घ सफल जीवन प्राप्त कर सकते हैं। आप का मन दृढ़ होने पर भी
कभी-कभी चंचल भी होता हैं। एक से लिये गये निर्णय को बदलना आपके लिए कठिन है। संपत्ति, कार्यसिद्धि, सफलता और प्रगति सुलभ प्रमाण में प्राप्त होगी। ऐश्वर्यपूर्ण दीर्घ आयु का योग है। स्वयं बुद्धि से हर समस्या का समाधान निकालने में निपुण हैं।

अमलयोग

लक्षण : लग्नस्थल या चन्द्रसथान से दशवें स्थान पर लाभदाई श्रेष्ठ गृहों का रहना।

आप अमला योग में जन्म हैं। आप दीर्घायु तथा धनी होंगे। अपनी पवित्रता के विचारों और कर्मों से समाज में आदर प्राप्त करेंगे। आप ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करेंगे। आप को लोग निष्कलंक और चरित्रवान समझेंगे। किसी भी परिस्थिति में आपका मन चंचल न रहेगा। ऐश्वर्य, कीर्ति और मान-सम्मान का संगम इस योग में होता हैं। अतुलित कीर्ति प्राप्त होगा।

शरीर शौख्य योग

लक्षण : लग्नाधीपती, गुरु और शुक्र चतुर्थान पे रहे हैं।

इस योग से राजकार्य क्षेत्र से आपको सहकार -और सहयोग प्राप्त हो सकता है। आपकी आयु दीर्घ हैं और धन-संपत्ति से सुख प्राप्ति है।

द्विगृह योग

लक्षण : दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।
रवि, शुक्र भाव में है ।

प्रायोगिक परिस्थितियों में आप बुद्वि पूर्वक होकर काम करना जानते है नौतिकत्व मूल्यों और व्यवहारों पर ध्यान देना चाहिए । दूसरों की सहायता किए बिना अपने बुद्वि और शक्ति से धन कमाना चाहिए ।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति
जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्दि को सूचित करता है ।

लग्न स्थान में धनुराशि होने से स्थायी आमदनी प्राप्त करने युक्त उद्योग या नौकरी पसंद करनेवाले व्यक्ति हैं। आप सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं। निकट के मित्रों की सलाह को भी आप स्वीकारते नहीं। आपके पास किसी के सिफारिश पत्र को लेकर कोई आ जाये तो उसको निराशा के अलावा कुछ न मिलेगा। करकौशल्य कार्यों में अभिरुचि लेनेवाले हैं। आप सरकारी नौकरी, खेती और विदेश गमन से होनेवाले कार्यों के साथ जुड़े रह सकते हैं। इन कार्यों से जीवन में उन्नति प्राप्त होगी। समुद्र के माध्यम से होने वाले सफर के निमित्त या जिस व्यवसाय में जल अधिक भाग में इस्तेमाल किया जाता हो, उनके माध्यम से सफलता और उन्नति प्राप्त होगी। आप अति तेज़ चलने के आदि हैं। मंदिर और देवालय के कार्यों में अति अभिरुचि रखनेवाले हैं। स्वच्छ और सुन्दर वस्त्र परिधान के शौकीन हैं। धनु लग्न में उत्पन्न व्यक्ति विद्वान, कानून विद्, मज़बूत इरादेवाला, रूपवान, कलाप्रेमी, जनप्रिय और उत्तम प्रशासक होता है। 'प्राज्ञचराज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतरां मनोज्ञः..'

मन को संतोष प्रदान करनेवाली संतान की प्राप्ति होगी। ईश्वर कृपा आप पर सदा बरसती रहेगी। जन्मकुंडली में सातवें स्थान पर रही हुई मिथुनराशि, विवाह के बाद भाग्योदय की ओर खींच लेगी। जीवनसाथी समर्थ, सौन्दर्यवान और विनयशील होंगे। विदेशवास के समय शत्रुता न बढ़े इस बात को सदा ध्यान में रखना लाभदायी होगा। आप असाधारण सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं। असाधारण स्थिति में धन लाभ होने की संभावनायें दिखाई देती हैं। विनयशील व्यवहार, सात्विक निःस्वार्थ, मनोभाव इत्यादि आपके उन्नति के कारण बनेंगे। निज संस्कृति व धर्म के प्रचार में रुचि होगी। २२से २४ वर्ष के बीच जीवन में स्थिरता का शुभारंभ हो सकता है।

बारहवें स्थान पर वृश्चिक राशि के होने के कारण आप अनुकरण करने के स्वभाव के आदि हैं। नीच मनोवृत्ति के लोगों से संबन्ध विच्छेद करना ही आपके लिए उचित होगा। उनसे बचते रहना आपके लिए अनिवार्य है। दुष्ट लोगों से बचते रहना आवश्यक हैं। सतेजता और जागृति सलामती के चिन्ह हैं।

चिंतन कार्य में ज़्यादा समय व्यर्थ करने के आदि हैं। तीव्र गति से कार्यों का निर्वाह करने का स्वभाव है। इस कारण मन पसन्द कार्य बड़ी चाहत के साथ करते हैं। आमदनी के अनेक मार्ग प्राप्त होंगे। भागीदारी में व्यापार करना आपके लिए लाभदायी नहीं होगा। आपके जीवन के ३२-वर्ष के बाद चिर स्मृति में रह जानेवाली घटनाएं घटित होगी। किसी भी अंजान व्यक्ति के साथ निकट का संबन्ध स्थापित करने से पहले अन्य से सलाह-मश्वरा करना लाभदायी होगा। इससे आप धोखा देने वाले व्यक्तियों से बच जायेंगे। किसी डोक्यूमेन्ट पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे ठीक पढ़ लेना चतुराई का काम होगा। योग्य मित्रों से सलाह लेना आवश्यक होगा। जीवन के १९,२०,२८,२९,३७,३८,४६ और ५५ वाँ वर्ष अति प्रधान रहेंगे।

लग्नाधिपति सातवें स्थान पर है। इस कारण जीवनसाथी का स्वास्थ्य मानसिक तनाव उत्पन्न करने वाला होगा। उसकी सुरक्षा के प्रति आपको ज़्यादा ध्यान देना होगा। जीवन में निराशा के अवसर भी आयेंगे। यहाँ वहाँ भटकना भी हो सकता है। फिर भी श्रेष्ठ स्थान जीवन में प्राप्त होने की संभावना है। सुख-दुख, वैभव-अभाव, भोग-विरक्त, राज-रंकवाली सरिता साथ-साथ बहेगी। यात्रा के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। राजपक्ष व व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी।

सूर्य प्रथम स्थान पर रहा है। आप धैर्यशील व्यक्तित्ववाले लोगों में गिने जायेंगे। छोटी-छोटी बातों को लेकर क्रोधित होने का स्वभाव है। हर कार्य बुद्धिपूर्ण रहेगा। हर कार्य में विलंब का अनुभव होगा। अनेक विषयों में विज्ञ हूँ ऐसी

संभावनाओं का भ्रम पैदा होगा। आपकी आँखों में विशेष प्रकार का आकर्षण होगा।

शुक्र प्रथम स्थान पर रहने से जीवनसाथी के प्रति अनन्य प्रीति रखनेवाले हैं। ज्ञान प्राप्त होगा। प्रणय बंधन इत्यादि विषयों में अति अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हैं।

आपके जन्मकुण्डली में पहला भाव के लग्न देव वित्त सम्बधी सम्पन्नता, विचारण शक्ति और प्रसिद्दि को सूचित करता है ।

क्योंकि लग्न देव दसवी भाव के लग्न केन्द्र में उपस्थित है आपको अच्छा परिणाम मिलेगा ।

गुरु लग्न से प्रभावित है । आप हमेशा अच्छे और साफ कपडे पहनना चाहते है और बोली में अच्छे वाक्यों का प्रयोग करना चाहते है ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भावाधिपति के नव में स्थान पर रहने से संपत्ति, बुद्धिमता, कार्यकुशलता, धैर्यशीलता इत्यादि गुणों से संपन्न होंगे। बालावस्था में स्वास्थ्य संबन्धी कोई समस्या का सामना करना होगा। समय के बीतने पर स्वास्थ्य में सुधार होगा। धार्मिक और पुण्य स्थलों पर जाने की संभावना है। सब प्रकार के भौतिक सुख प्राप्त होंगे। वाहन की सवारी सदा सावधानी पूर्वक करें। जीवन में एकाध बार दुर्घटना का सामना करना अनिवार्य सा जान पड़ता है।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्दि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति नवमें स्थान पर रहने से, इच्छानुसार पिता के माध्यम से सुख और संतुष्टि प्राप्त होगी। विवाह के बाद भाग्योदय की संभावना रखते हैं। संतान प्राप्ति का सौभाग्य उपलब्ध होगा। मानसिक तनाव से मुक्त होने के प्रयास में असफल होने की संभावना है। स्त्रियों के माध्यम सफलता प्राप्त करना सरल होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में थोड़ी न्यूनता आने की संभावना है।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्मपत्रिका में चौथे भाव का मालिक सातवें भाव में स्थित हैं। सामान्यतः आप सुखी होंगे। ज़मीन और बड़े मकान आपके आधीन होंगे। अभ्यास और अन्य कार्यों के संपूर्ण विजयी बनने में अति कठिन प्रयास करनेवाले हैं। इस
कारण सफलता आपका साथ सदा देगी। 'सभायां मूकवद्भवेत्' जन सभाओं को संबोधित करने में कठिनाई
अनुभव होगी।

चौथे भाव का स्वामी गुरु (बृहस्पति) है। श्रेष्ठ धार्मिक प्रचारक तुल्य लक्ष्यबोध आप में प्रकट हो उठेगा। धर्म गुरु सा सम्मान प्राप्त होगा। आपका व्यक्तित्व विद्यार्थी काल में और सभी कार्यक्षेत्र में सहयोगी बनेगा। आपकी आत्मीयता और स्वाभिमानी स्वभाव आपके मुख्य लक्षण है। एक न्याय मूर्ति के तुल्य समता और समभावपूर्ण व्यवहार आपकी शोभा में ओर भी बढ़ावा देगा। आपकी मानसिक परिपक्वता और निर्णयात्मक शक्ति उल्लेखनीय है।

केतु आपके चौथे भाव में स्थित होने से आपको माता तथा संपत्ति से अलग रहना पड़ेगा। दूर देश की यात्रा करनी पड़ेगी। जिससे आपको अच्छे अनुभव प्राप्त होंगे। जीवनकाल में अप्रत्याशित परिवर्तन का सामना करना होगा।

आपको दूसरों के भाग्य के बारे में भविष्य बताने की विशेष शक्ति होगी। इससे किसी योग्यपद पर रहें तो जीवन में उन्नति प्राप्त होगी। 'सदा व्यग्रता च' चिन्ता से छुटकारा पाना कठिन जान पड़ता है। पिता से विशेष सुख की आशा न करना ही लाभप्रद होगा।

चन्द्र दुष्ट ग्रहों से प्रभावित है। इस कारण मातृ सुख और मानसिक स्वस्थता के लिए आपको प्रयास करना होगा।

बच्चे, मन, बुद्दि
जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्दि को सूचित करता है ।

पाँचवां भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से बच्चों के कारण अथवा स्वास्थ्य के कारण समस्या खड़ी होगी। वायु विकार अथवा श्वासरोग से सदा बचते रहने का प्रयत्न होना चाहिए। संतान सुख प्राप्त होगा। मानसिक उद्वेग की संभावना है। इस कारण कुछ अंश तक आप का स्वभाव क्रोधी होगा।

रोग, शत्रु , मुसीबतें
छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

छठ्ठा भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से स्वास्थ्य में निर्बलता का अनुभव होगा फिर भी जीवनकाल में श्रेष्ठ प्रसिद्धि और मान-सम्मान उपलब्ध होगा। संबन्धियों से शत्रुता का अनुभव होगा। धन, दौलत और समुदाय के बीच मिली मान्यता में कोई कमी नहीं रहेगी। पुत्र सुख के लिए उपायादि करने का योग है।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति बारहवें स्थान पर है। महिलाओं के प्रति विश्वासपूर्ण नैतिक व्यवहार का पालन करनेवाले पुरुष है। स्त्रियों से आवश्यकता से ज़्यादा मिलने-जुलने के कारण आलोचना के पात्र होने की संभावना है। इस कारण सजग रहना लाभदायी होगा। अपने दांपत्यजीवन को सुखमय बनाने के लिए और गृहनायक की ज़िम्मेदारी ठीक प्रकार से निभाने के लिए ज़्यादा पुरुषार्थ की आवश्यकता रहेगा। कृत्यनिष्ठा पर बड़ा ज़ोर देनेवाले व्यक्ति होते हुए भी स्वयं का व्यवसाय ही ऐसा रहेगा जिससे समय का परिपालन ठीक प्रकार निभा नहीं पायेंगे। इस कारण परिवार के बीच असंतोष उत्पन्न होगा। आप स्वाभिमानी होने पर पिता के नाम को रोशन कर पायेंगे। अपनी संतानों के शिक्षाकार्य और अभ्यासकार्य के लिए आप समय नहीं दे पायेंगे।

उत्तर दिशा से श्रेष्ठ जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

गुरु (बृहस्पति) सातवें स्थान पर है। आप विद्या संपन्न व्यक्ति बनेंगे। सौन्दर्यपूर्ण जीवनसाथी प्राप्त होगा। 'स्थान हानि करः जीव' के नियमानुसार वैवाहिक जीवन में कुछ समस्या हो सकती है। विवाह के बाद जीवन में प्रगति हासिल होगी। मानसिक विकारों का मूल्यांकन करने में समर्थ हैं। मूल्यांकन के आधार पर जीवन में परिवर्तन लाने की कोशिश जारी रहेगी। सट्टेबाजी और अन्य रचनात्मक कार्यों के प्रति अभिरुचि रखने वाले पुरुष हैं। श्रेष्ठ संतान और दूरदेश सुखमय यात्रा का योग है। दांपत्य में क्लेश को प्रवेश न करने देने का प्रयत्न करना चाहिए।

सूर्य गुरु के स्वाधीन रहा है। इस कारण आपकी पत्नी आत्मीय स्वभाव की ओर परिपक्व व्यक्तित्वपूर्ण व्यक्ति होगी। जीवन में योग्य मार्गदर्शन मिलता रहेगा और इस कारण आप भाग्यवान समझे जायेंगे।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पत्नी के साथ छोटे-मोटे कारणों को लेकर झगड़ा होता रहेगा। इस झगड़े

को बड़ा स्वरूप न देना ही बुद्धिगम्य माना जायेगा। किसीसे परंपरा से कुछ भिन्न प्रकार का संबन्ध होना संभव होगा। पत्नी के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होग । अनेक लाभ भी होंगे।

दीर्घायु , मसीबतें
आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से माता पिता से मिलनेवाले सुख में न्यूनता का अनुभव होगा। अनेक अपवादों का सामना करना पड़ेगा। व्यावसायिक सफलता के लिए अधिक कर्मठता की आवश्यकता है। सर्वोच्च सम्मान से वंचित रह सकते हैं।

मंगल (कुज) आठवें स्थान पर रहा है। आपका पत्नी के साथ का व्यवहार रूष्ट होगा। कार्य की सफलता को प्राप्त करने के लिए कोई अयोग्य मार्ग भी स्वीकारने में आप तत्परता दिखायेंगे। जीवनकाल में शल्यक्रिया करवानी होगी। आप निरपराधी होते हुए भी आक्षेपित होने की संभावना रखते हैं। अपरिचित व्यक्ति के साथ यौन संबन्ध विकार कारक हो सकता है।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति प्रथम स्थान पर है। स्वप्रयत्न और स्वपुरुषार्थ के माध्यम से उन्नति प्राप्त करने वाले व्यक्ति हैं। 'लग्नगते नवमपतौ देवान्गुरुन्मन्यते शूरः'

शनि आपके नौवे भाव में स्थित होने से आपको एकान्तवास होना संभव है। विवाह कार्य में विलंब होने की संभावना है। आपको झगडालू माना जायेगा और आपका व्यक्तित्व शूरवीरता से भरा होने की संभावना है। 'धर्मकर्म रहितो.....' धार्मिक कर्मकांड में अनास्था होगी।

नवमा भावाधिपति पापयुक्त संजोगों से चारों ओर से ढका गया है। अन्य गृहों के सान्निध्य से अनुकूल स्थिति के बदले प्रतिकूल स्थिति उत्पन्न होगी। फिर भी आंशिक सुख की अनुभूति हो सकता है।

नवमा भावाधिपति गुरु (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अतः अनेक प्रगति का कारण बन सकता है। भाग्येश आपको अनिष्ठों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होग ।

लाल या लाल रंग के मिश्रण से बने रंगों को धारण करने से अनुकूल स्थिति पैदा होगी। रुबी पत्थर अगर आपके आभूषणों में जडा जाये तो अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी। पिता से अनुगृहित होने की संभावना बढ़ती है। औषधि और रसायनिक साधनों के कार्य क्षेत्र में उपरोक्त रंग धारण करने से और रूबी पत्थर के प्रभाव से आपको अनेक तरह का सहयोग और लाभ प्राप्त होगा।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपके जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को बारहवी भाव पर स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा के श्लोक यह सूचित करता है कि आपको सरकारी काम काज के बावजूत धन-नष्ट होगा । आपको अपने शत्रुओं पर भय होना चाहिए । आप चतुर और बुद्विशाली है लेकिन अनावश्यक कार्य के लिए चिन्ताग्रस्त रहते है ।

दसवी भाव कन्या राशी है । कन्या राशी कलात्मक स्वभाव को उत्पन्न करता है । यह आपको हस्त सम्बधी कौशलता में निपुण बनाएगा । यह आपके आविषकारशील और जिज्ञाशु बनाएगा । जो इस चिनह् को नियंत्रित करता है आपको कला और साहित्य में रुची प्रधान करेगा । आपको उत्तम बोली की शक्ति होगा । आप अच्छि अध्यापक, लेखक, कूडनीतिज्ञ, राजप्रतिनिधि, इंजीनियर, कलाकार था अच्छी बन सकते है । गणित में आपका निपुणता कम्प्यूटर प्रोग्रामर बनने के लिए सहायक होगा । स्वास्थ्थ सेवाँए, प्रकाशन, शिक्षा, नानबाई कीदुकान, मिठाई बनाने या बेचनेवाला और वस्त्र आपके लिए उचित उघोग क्षेत्र है ।

ग्दृदृद त्ग्न द्रदृन्नत्ग्यत्दृदङ्ग्ङ्ग त्द ग्चण्ङ्ग १०ग्चण. चन्द्र दसवी भाव में उपस्थित है ।

सरावाली के अनुसार आप दुख से मुक्त, ईमानदार और अपने कर्म में सफल रहेगा । आप धनिक, शुद्व, शक्तिशाली और उदार होगा । चन्द्र बचैन और परिवर्तनशील है । यह सूचित करता है कि आपके उधोग में भी अनेक परिवर्तन होगा । आप जो परियोजना को सूक्षमता से संभले उसमें सफलता पा सकते है । चन्द्र. जो एक स्त्री गृह है, यह सूचित करती है कि आपके उधोग में एक स्त्री की महत्वपूर्ण प्रभाव होगा । आप अपने माता से घन दान में पा सकते है । आप विदेशी संम्बधों और यात्रों से लाभ उठा सकते है । चन्द्र आपको सार्वजनिक जीवन में अभिलाषा प्रधान करती है । आपको अनेक मित्र होगें जो आपके उधोग में सहायक होगा ।

कन्या राशी उपस्थित चन्द्र आपको पूर्णता वादी बनाएगी । आप पीडितों और दुखी लोगें से दयालु और कोमल होगा ।

आपके जन्मकुण्ली में राहु दसवी भाव में उपस्थित है।
मन्त्रेसवरा के अनुसार आप प्रसिद्व होगा । आप बच्चे के साथ मिले जोल ज्यादा पसन्द नहीं करते । आपको दूसरो की व्यापार में शमिल होने की झुकाव है । आप निर्भय है । आप महत्व पूर्ण शक्ति शाली पदों पर पहुँचने के लिए काम करेगा । आज जल्दी धन कमाता चाहते है ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

दूरसंचार, उपगृह, इन्टरनेट्, नेट्वर्क स्वास्थ्थ अधिकारी, विदेशी का माल देश में लाना, आयात और निर्यात करना, व्यापार, राजप्रतिनिधि, राजनीतिक सेना । गुल्म, वस्त्र, रेशा, प्रकाश विज्ञान, विक्रियक।

दसवी भाव में उपस्थित गृहों के संयोग से कुछ निर्दशों को प्राप्त कर सकते है । इन गृह का विशिष्ट मेल कुछ प्रभाव को उत्पन्न करता है ।

चन्द्र और राहु का मेल यह सूचित करता है कि आपको विषैले और हानिकारक चीजो जैसे फफँदनाशि कीटनाशि से सम्बधित पेशा उचित होगा ।

आमदनी
ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गे को सूचित करता है ।

ग्यारहवाँ भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से आप स्वभाव से निश्छल और आत्मीयता रखने वाले व्यक्ति हैं। हर समस्या का तटस्थ भाव से अवलोकन करने में और निर्णय लेने में निपुण हैं। साहित्य के प्रति नैसर्गिक अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। हर कार्य में सफलता आप का साथ देगी। आप विजयी बनेंगे। लाभदायी अनेक संजोग प्राप्त होंगे। विवाह के बाद ऐश्वर्य में अभिवृद्धि होगी। समदर्शी के रूप में ख्याति मिलना संभव है।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति आठवें स्थान पर रहने से अनेक गुण विशेषण से भरा हुआ व्यक्तित्व प्रगट होगा। अचल संपत्ति की प्राप्ति और निर्माण का सुस्पष्ट योग बनता है। जीवन में प्रगति सुनिश्चित है। सौहार्दमय वार्तालाप में निपुण हैं। सामान्यतः औसत से अधिक आयु के मालिक हैं।

बुध बारहवें स्थान पर रहा है। इस कारण अनिवार्य परिस्थिति में या संजोग से झूठ बोलने में ज़रा भी झिझक नहीं होगी। विद्या संपन्नता में कमी हो या निपुणता फिर भी जीवन में सफलता आपका पूरा साथ देगी। आप इस कारण से सद्भागी कहलायेंगे।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

राहु दशा

राहु जुआ और कल्पनाओं का देवता है। इस दशा काल में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन और बुराइयाँ आ सकती है। परिवार के लोग और साथी लोग आपको शंका की दृष्टि से देखेंगे। इस काल में किसीसे झगड़ा न हो इसकी ओर ध्यान देना है। रोगों से पीड़ा होने की संभावना है। विषबाधा से बचने की कोशिश करनी है। विरोधियों से आपको सामना करना होगा। रिश्तेदार भी विरोधी बनने की संभावना रखते हैं। उच्च अधिकारियों का अनुग्रह कम होगा। गले में दर्द और आँखों के रोग होने की संभावना है। ई.एन.टी डाक्टर के उपदेश के अनुसार रोग होने से पहले ही उपचार करना अच्छा होगा। राहु सब के लिए एक सा नहीं होता। अच्छे स्थान पर हो तो सन्तान सुख, समृद्धि और सब प्रकार के ऐश्वर्य देनेवाला होता है। चर्म रोग से पीड़ा अनुभव होगी। विवाहित होने पर पत्नी और संतान का कुछ दुख सहना होगा। राहुदशा जब बालावस्था काल में आती हैं तो अभ्यास क्षेत्र में विक्षेप अनुभव होता है। दांत की पीड़ा हो सकती है। ज़हरीली वस्तुओं से बचना आवश्यक है। सचेत रहना होगा। शत्रुओं के आक्रमण से सजग रहना होगा। बड़ों से मिलते सहयोग में क्षति होगी। इस काल में भक्तिपूर्ण जीवन शाँति प्रदान करता है। धन की अल्पता मानसिक सुख की कमी, असंतोष की अधिकता, शत्रु से विवाद और अत्यधिक आपसी आदि फल प्राप्त होंगे।

∇ (8-02-2009 >> 10-08-2010)

राहू दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको पारिवारिक सुख प्राप्त होगा। दांपत्य जीवन में सुख का अनुभव होगा। हर कदम पर छोटी मोटी समस्याओं का सामना करना होगा। आपको अपनी इच्छा के विरुद्ध कई बातों को अनदेखी करनी पड़ेगी। बच्चों के निमित्त निराश रहना पड़ेगा। मानसिक परेशानी अथवा ई.एन.टी. विकार होने की संभावना है।

∇ (10-08-2010 >> 29-08-2011)

राहू दशा में मंगल की अन्तर्दशा में शत्रुओं के आक्रमण का सामना करना पड़ेगा। आग और बिजली से कोई आपत्ति होने की संभावना है। इन से सावधान रहना अच्छा है। इस समय मन को प्रार्थना और ध्यान से बहुत शाँति प्राप्त होगी। चोट या रोग के कारण परिवार में शल्य क्रिया की आवश्यकता पड़ सकती है।

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछड़ना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम

काल सुखद हो सकता है।

गुरु बलवंत रहने से अनेक शुभ फल की प्राप्ति होगी। राज्यलाभ, ज्ञान वृद्धि,, व्यवसाय वृद्धि और पारिवारिक सुखों में वृद्धि होगी।

इस दशाकाल में शिक्षा या ज्ञान पाने की बड़ी इच्छा होगी। अपना पूरा समय इस में लगाकर स्कूल में या कालेज या समाज में प्रसिद्ध बनने का अच्छा मौका है। इस दशा के उत्तरार्द्ध में सन्तान सुख और संपत्तिसुख प्राप्त होगा। आपका जीवन सुखमय रहेगा। किसी तीर्थयात्रा में या धार्मिक त्योहार में भाग लेना संभव है। पीले रंग की वस्तुएँ जैसे की सोना, पीतल आदि भाग्य सूचक हैं। विवेक और गंभीरता में वृद्धि होगी। बड़प्पन प्राप्त होगा।

∇ (29-08-2011 >> 16-10-2013)

बृहस्पति की दशा में स्व-अन्तर्दशा का समय सदा अनुकूल होना ज़रूरी नहीं है। खासकर गुल्ली उपस्थिति में जब वह बलवान या स्वक्षेत्री होकर केन्द्रस्थ हो। तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। बच्चों के लिए यह अच्छा समय है। उनका कार्य सुगमता से चला सकेंगे। मन और दियाग की शक्ति बढ़ेगी। पहले की अपेक्षा सहकार्यकरों से ज़्यादा सहयोग प्राप्त होगा। उच्चधिकारियों और बुज़ुर्गों के असंतोष में कमी होगी। इस अन्तर्दशा में आवश्यकता से अधिक प्राप्त करने की आशा, निरर्थक ही होगी। भक्ति मार्ग पर कुछ सफलता की आशा कर सकते हैं।

∇ (16-10-2013 >> 28-04-2016)

गुरु की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आपका मन अयोग्य कार्यों के प्रति आकर्षित होगा। आप को पापमय कार्य करने की प्रेरणा होगी। आपको अपने आत्मविश्वास में कमी होने का भ्रम होगा। अपने मन की शान्ति के लिए आप व्यसनों से दूर रहें तो उचित होगा। जन समर्थन में न्यूनता आ सकती है।

∇ (28-04-2016 >> 4-08-2018)

बृहस्पति की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आपकी प्रगति होगी। जिन वस्तुओं से वंचित रहना पड़ा था वह सरलता से प्राप्त होगी। आपको बहुमान्य व्यक्तियों का परिचय प्राप्त होगा। आप के हाथों से सत्कार्य घटित होंगे। पर इसके विरुद्ध आपको नीच लोगों के कारण अपवाद सहना पड़ेगा और आप को व्यर्थ का अपराधी बनाया जायेगा। अभ्यास क्षेत्र में उन्नति संभावित है।

∇ (4-08-2018 >> 11-07-2019)

बृहस्पति दशा में केतु के अपहार में नौकरी यानी व्यवसाय बदलना पड़ सकता है। आपके जीवन में यह एक महत्वपूर्ण मोड़ का समय है। विदेश गमन का योग है। निर्णय करने से पूर्व ऋणात्मक तथ्यों पर ध्यान अवश्य दें, अन्यथा हानि हो सकती हैं।

∇ (11-07-2019 >> 11-03-2022)

बृहस्पति दशा में शुक्र के अपहार में बिना विश्राम के काम करना पड़ेगा। अनेक आश्चर्यपूर्ण फल की प्राप्ति होगी। आपको अपने प्रतिस्पर्धी का सामना करना पड़ेगा। अपने अधिकारों का उपयोग करने की इच्छा होगी। सत्याग्रह इत्यादि कार्यों में हिस्सा लेना पड़ेगा। विपरीत लिंग के लोग आपकी प्रगति में बाधा डालेंगे। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी और आपकी मानसिक शक्ति दुगुनी बढ़ेगी। खण्डनात्मक कार्यों के प्रति अभिरुचि जाग्रत होगी। बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा। आर्थिक लाभ की संभावना है। घर में विवाहादि मंगल क्रम हो सकते हैं। भू, भवन और वाहन विषय में भी यह समय अच्छा रहेगा।

∇ **(11-03-2022 >> 28-12-2022)**

गुरु दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में शत्रु आप से पराजित होंगे। अनेक सत्कार्य और मंगलमय घटनायें घटित होगी। मान्यता प्राप्त होगी। अनेक श्रेष्ठ व्यक्तियों से संबन्ध स्थापित होंगे। वाहन योग की संभावना है।

∇ **(28-12-2022 >> 28-04-2024)**

बृहस्पति दशा में चन्द्र के अपहार में आप सब तरह के शारीरिक-भौतिक सुखों का अनुभव कर पायेंगे। लोग जो आप का सान्निध्य पसन्द न करते थे वे अब आप से मिलने जुलने की आशा के साथ आप के पास आयेंगे। यह जन सम्मति के लिए अच्छा समय है। विवाह, संतान और प्रगति विषय में भी यह समय उत्तम रहेगा।

∇ **(28-04-2024 >> 4-04-2025)**

बृहस्पति दशा में मंगल के अपहार में आत्मविश्वास जाग्रत होगा। आपकी निडरता और साहस सीमातीत योग्यता नहीं मानी जायेगी। अनिष्ट कार्यों के प्रति मन लुभायेगा। आप प्रसिद्ध और प्रतिष्टित होंगे। आप को बचपन की मीठी बातों का संस्मरण करने का सन्दर्भ प्राप्त होगा।

∇ **(4-04-2025 >> 29-08-2027)**

बृहस्पति दशा में राहू के अपहार में आप द्वारा किए गये श्रेष्ठ कार्यों का विपरीत फल प्राप्त होगा। ऐसी परिस्थिति में पीछे हटना पड़ेगा। स्वनिवास स्थान से दूर हटकर शाँत रहना लाभदायक होगा। पीड़ित स्वजनों की व्यथा देखकर मन व्याकुल होगा। शारीरिक विकार और मानसिक संताप होगा।

शनि दशा

शनि, दुःख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में ऊँच-नीच, सुख-दुःख दोनों का अनुभव होगा। सरकार या उच्च अधिकारियों के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। अनेक सेवक और सहायकों से आपको सहायता मिलेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार या सन्तान से सुख में कमी होने की संभावना है। कुछ कारणों से मन चंचल रहेगा। हाथों और पैरों में कोई पीड़ा होने की संभावना है। श्रेष्ठ नायक का पद सफलता पूर्वक संभाल पायेंगे। जीवन के उत्तरार्ध काल में शनिदशा के कारण, अपनों से बड़ी उम्र की महिला के साथ संपर्क होने की संभावना है। इस तरह का संपर्क यदि लंबे समय तक रहता तो अयोग्य बंधनों में फँसने की भी संभावना है। आप से हीन स्थिति में रहनेवाले व्यक्तियों से रिश्ता जुड़ सकता है। बड़प्पन, प्रतिष्ठा, सुवर्णाभूषण और धनादि की प्राप्ति होगी। धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग देना संभव होगा।

∇ **(29-08-2027 >> 1-09-2030)**

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप क्रोधी और झगड़ालू बनेंगें। छोटे छोटे झगड़ों के प्रति मन आकर्षित होगा। इस प्रकार के व्यवहार के कारण बाद में पछताना होगा। आपको दूर देशों की यात्रा करनी पड़ेगी। आप का निवास स्थान अपने घर से दूर रहेगा। नीच वृत्ति के लोगों का सहवास रखना पड़ेगा।

∇ **(1-09-2030 >> 11-05-2033)**

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप को अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आपकी इच्छाएँ सफल होगी और लक्ष्यप्राप्ति भी होगी। प्रगति की प्रतीक्षा कर सकते हैं। कर्तव्यबोध जाग उठेगा। प्रोत्साहन और सहायता चारों ओर से आपको प्राप्त होगी। अप्रतिक्षित लोगों से सहायता मिलेगी। निवास स्थान में बदली होगी। नौकरी में स्थानान्तरण की आशंका है।

∇ (11-05-2033 >> 20-06-2034)

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दुःख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आप के व्यक्तिगत स्वातंत्रय पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

29-08-2046 से प्रारंभ होता है

बुध दशा

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक् हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने हस्त नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र के चन्द्र है । समालोचन करने पर आप गौरव भाव प्रकट करेगों । यह आपके सफलता के मार्ग में रुकावट बन जाएगा ।
जन्म नक्षत्र का आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल है । हस्ता नक्षत्र होने के बावजूद राहु, शनि और केतु दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके विचार और कार्य में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई देगा । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आप अपने बुद्दि के साथ स्वार्थता को भी नियुक्त करेगा । इस समय अप दूसरों के गलतियों को संकेत करने में दिलचस्प होगें । जीवन में आपको ऊचाई और नीचाई के अनुक्रमण का अनुभव होगा । अपने धर से दूर रहना पड़ेगा । इस समय लाभहीन चीजों की ओर साधारण रुप से ज्यादा झुकाव होगा ।

कन्या जन्म राशी का अधिपति बुध है । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आपको विधा और व्यवहार के बारे में व्यक्त अनुमान प्रस्तुत करना पडेगा । आपका विचार के लिए लाभदायक है, यह जानना जरुरी है । धार्मिक कार्यो का परिणाम पाने में देर लगेगा । स्वाती, अनुराधा, मूल, अशविनी, भरणी, और कृत्तिका नक्षत्र सामान्य रुप से अनुकूल नहीं होगा ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

प्रतिकूल दाश में चन्द्र और माता देवी की प्रार्थना करता लाभदायक है । माता देवी की आर्शिवाद के लिए हस्ता, श्रावण और रोहिणी नक्षत्र के दिवस पर मंदिर में दर्शन करना चाहिए । हस्ता नक्षत्र और सोमवार जिस दिन साथ आता है, उस दिन विशुद्वता के साथ उपवास रखना उचित होगा ।

अच्छे फल प्राप्ती के लिए रोज चन्द्र की प्रार्थना करना चाहिए । इसके अलावा रोज पुराणों और धार्मिक पुस्तकों का पारायण करना चाहिए । वस्त्रों को चुनते समय सफेद और हरे रंग को ज्यादा महत्व देना चाहिए । यह चन्द्र को प्रसन्न करने के लिए सहायक होगा ।

इसके अलावा गृह के अधिपति को प्रसन्न करने का लक्ष्य आपके ऊपर भाग्य को वर्षित करेगा ।

हस्त नक्षत्र का अधिपति सूर्य है । सूर्य को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ॐ विभ्राद् भ्रिहत्तपिभतु सौम्यम् मद्धायुर्धदध
ध्यज्ञपता वर्विहुतं वातजुतोयो
अभिरक्षतित्मन प्रजाः पुपोष पुरुध विराजति

२ ऊ सवित्रे नमः

इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः हस्तनक्षत्र का जानवर गाय का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्दि प्राप्त होगा ।हस्त का औधोगिक पेड, अंभषम् पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी , कौआ को पीड़ा नहीं देना चाहिए । हस्त नक्षत्र का मूलतत्व अगनि है । अगनि देव की पूजा करने से और दिया जलाने से इस जन्म

नक्षत्र के लोगो को भाग्य प्रधान करेगा ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :राहु

अभी आप राहु दाश से गुजर रहे है ।

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृह स्थान के अनुसार, राहु दाश में प्रतिकूल परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा । आप चिन्ता और डर से पीडित होगों । अप्रायोगिक कल्पना से आपके जीवन शैलि में परिवर्तन होगा ।

राहु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब राहु प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब राहु कमज़ोर है आप मदोन्मत करने वाले वस्तुओं से आकर्षित होगें । अपने योग्यता के उपयोग करने का अवसर कम हो जाएगा ।

क्योंकि आप इस समय आपको विषैले चीजों की आक्रमण का सभावना है, खाते समय और यात्रा करते समय ध्यान रखना चाहिए । अक्सर आप अपने चिन्तक्षोभ को नियंत्रींत नहीं कर सकते । आप समय के मूल्य की उपेक्षा करते है ।

इस समय आपको कोई दोस्ता का सहारा नही होगा । आपको त्वचा रोग का अनुभव होगा । बोली मे आपकी शक्ति कम हो जाएगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि राहु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें राहु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर राहु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

काला और तंम रंग का वस्त्र राहु के लिए प्रिय है । इसलिए राहु को शान्त कराने के लिए नागें की पूजा करते समय और मंदिर जाते समय काला वस्त्र पहनना चाहिए ।

जीवन रीति

राहु दाश में आपका जीवन राहु गृह के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । राहु दाश मुख्य रुप से विचार शक्ति और चेतना को प्रभावित करता है । इसलिए ऐसे क्रीडा से दूर रहना चाहिए जो आपके मानासिक स्थिरता को बैचैन करें । पृथक् होकर या दिवा स्वप्न को जीवन मे स्थान नहीं देना चाहिए और हमेशा किसी अच्छे काम में व्यवस्थ रहना चाहिए । जो लोग मदिरा अनैतिक कार्य और स्वापक औषधों को मानसिक विषमताओं के लिए संस्तुति करे उनसे दूर रहना चाहिए । ऐसे काम में शमिल रहना जो आपको आत्मविश्वास प्रधान करे और मानसिक रुप से असतुष्ट लोगें को दूर रखो,आपके लिए लाभदायक है । अगर आपके परिवार में कोई कावु (वह जगह जहाँ सर्प देव का पूजा किया जाता है) तो उसका संरक्षण करना चाहिए । अकालिक यात्रा और अस्वाभाविक भोजनों को दूर रखना चाहिए । आपने समय को शन्तिपूर्ण वातावरण में बितात की कोशिश करें ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।

राहु को शान्त करने के लिए आप लोहा,पुष्पराग, गोड़ा, नीला वस्त्र, तिल, लोहा बर्तन में तिल का तेल आदि को दान दे सकते है ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 29-08-2011 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :शनि

आपका शनि दाश 29-08-2027 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र हस्त है । शनि सिंह राशी में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुणडली के गृहो के अनुसार, आपको शनि दाश में प्रतिकूल स्थितियो से गुजराना पडेगा । अपको अप्रत्याशित रुकावटों औप मुसिबतों का सामना करना पडेगा । आप प्रतिकूल स्थितियों से लड़ नहीं सकते । अनावश्यक परेशानी आपके नीद के लिए हानिकारक होगा ।

शनि दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब शनि प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब शनि कमजोर है, अक्सर जीवन में आने वाले मुसीबतों का धैर्यपूर्वक सामना करना पडेगा । आपको हमेश परिज्ञान के साथ विचारों कों व्यवस्था करने और उसे आचरण की क्षमता नहीं होगा । इसलिए वित्तसम्बधी नष्ट होगा ।

इस समय बड़ों के साथ आपका रिशत अस्वाभविक होगा । सामान्य रुप से आपके सामाजिक लेन देन में आवेश की कमी मेहसूस होगा । भोजन स्वास्थ्थकर हो, इसके लिए ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय रोगें से मुकाबला करने की शक्ति कम हो जाएगा । आप रोगें से जल्दी विलंभ नहीं होगें । शनि के बुरे प्रभाव से आपको बहुत अधिक सहना पडेगा ।

जब शनि प्रतिकूल स्थिति में है तो आपके प्रायोगिक चिन्तन शक्ति कम हो जाएगा । आपको अनावश्यक मानसिक परेशनियों से दूर रहना चाहिए ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि शनि प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें शनि को शान्त कराने केलिए कुछ

मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर शनि दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र
नीला और काला रंग शनि गृह के लिए प्रिय है । इन रंगे के वस्त्र पहनने पर आप शनि गृह को शान्त कर सकते है । हानिकारक प्रभावें को कम करने के लिए आपको शनिवार को नीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना
प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्येदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद शनि की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु (इस प्रार्थना के बाद)
कृष्णाय, वासुदेवाय नमामि हरये सदा
मन्दस्यानिष्टसंभुतम् दोषजातम् विनाश्ये (इस प्रार्थना को भी आलापन करें)

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

दान
शनि गृह को शान्त करने के लिए आपको तिल, काला गाय, नील माणि, तिल का तेल, लोहे से बना शनि का मूर्ति, काला रेशम, काला धान्य आदि को दान देना चाहिए । गरीबों को भोजन दान देना उचित है । एक बरतन, में थोड़ा तिल का तेल डालकर अपने प्रतिबिंब को देखकर उस तेल को दान देना चाहिए । इससे अच्छा फल प्राप्त होगा ।

पूजा
शनि को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है । नीला कमल, नीला जपाकुसुम आदि से शनि पूजा किया जाता है । तिल और कालेदाल से अभिषेक भी बनाया जाता है । नव गृहों के मदिर में दर्शन करना, गुरु गृह को नील कमल से आभूषित करना और दिया जलाना लाभदायक है । निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा शनि का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ सूर्यपुत्राय विहमहें
शनैश्चराय धीमहि
तनो मन्दः प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्दि प्राप्त होगा ।

अंगुलिक यंत्र
अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । शनि को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र

नीचे प्रस्तुत किया गया है-

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।
ऊपर दिए गए परिहारा को 29-08-2046 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :बुध

आपका बुध दाश 29-08-2046 को शुरु होता है ।

बुध बारहवाँ भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के आधार पर बुध दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपका अपेक्षपाती मुसीबतों का सामना करना पडेगा । अपने बोली पर स्वय नियंत्रण करना चाहिए । महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

बुध दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब बुध कमज़ोर है आप अपने काम में इच्छानुसार की तृप्ति और सतोष नहीं पा सकते । शुभ उत्सव या भोज में अप्रत्याशित रुकावट आने की संभावना है ।

इस समय ततसंगत निर्णयों के लेने और निबाहेन में आपको देर लगेगा । अपने क्षेत्र में आपको सहायता आवश्यक पड़ेगा । सभ कुछ आपके इच्छा के अनुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णयों को लेते समय विशेष ध्यान रखना चाहिए ।

व्यक्तिगत साबधों को निर्वाह करने में आपको मुसबित लगेगा । आपका वाक्य और कर्म (कार्य) प्रतिकूल परिणामों को उत्पन्न कर सकता है । सभ कुछ आपके इच्छानुसार नहीं होगा । राजनैतिक निर्णय लेते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीवतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि सूर्य प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें सूर्य को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए ।बुध को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर बुध दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र
हरा रंग बुध गृह का प्रिया रंग है । इसलिए बुध गृह को शान्त कराने के लिए हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । बुधवार को और बुध गृह की पूजा करते समय हरे रंग का वस्त्र पहनना उचित है ।

जीवन रीति
अपने विचार और कार्य में श्रेष्ठ सामिप्य रखने से बुध दाश के हानिकारक प्रभावों से आप बच सकते है । शिक्षा

सम्बधा अनुशासन जैसे अध्ययन, लेख था विधा में शमिल होने से आप बुध को शान्त कर सकते है । अपने संवाध विधा, और नए ज्ञान को पुष्ट करने पर लाभ उठा सकते है । नए नए भावाओं को सीखने की कोशिश करे और नए ज्ञान के क्षेत्रों में प्रवेश करने की कोशिश करें । अनोके शब्दों का प्रयोग करना और पंडितों के वाक्यों की अनुसरण करना बुध दाश में आपके लिए सहायक है । पुराणों और धर्मिक पुस्तकों को प्रतिदिन पठना आपके लिए लाभदायक है ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्येदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद बुध की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते
सोमजानिष्टसंभुतं दोषजातम् विनाश्य

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । बुध गृह को शान्त करने लिए आपको बुधवार में उपवास रखना चाहिए ।

उपवास केमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

नाम **: S.BOOPATHY** (पुरुष)
जन्म राशी **: कन्या**
जन्म नक्षत्र **: हस्त**

गृहस्थिती : 5-नवेम्बर- 2009
अयनांश : चित्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान की उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिक करने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जा फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया जा रहा है -

∇ (16-अक्टुबर-2009 >> 16-नवेम्बर-2009)

इस समय रवि दूसरा भाव का सक्रमण करेगा

वर्तमान स्थिति सर्वदा रहने वाली नही हैं। इस कारण व्यर्थ में घबराना अनुचित होगा। आपकी व्यथा धीरे धीरे कम होगी। अप्रत्यक्षमार्ग से सफलता और मान्यता प्राप्त होगी। आमदनी के मार्ग स्पष्ट और सरल बनेंगे। आर्थिक स्थिति में अधिक स्वतंत्र बनने की अभिलाषा जाग्रत होगी। प्रारंभ काल में आर्थिक स्थिति में तनाव रहेगा। मन और दिमाग दोनों को कठिन कार्य में लगाने पड़ेंगे। स्वास्थ्य की ओर सजग रहें तो लाभकारी होगा।

∇ (16-नवेम्बर-2009 >> 16-डिसंभ्बर-2009)

इस समय रवि तिसरा भाव का सक्रमण करेगा

स्वर्णकाल आनेवाला है। एक के बाद एक सफलता मिलनेवाली है। आपके पुरुषार्थ और प्रधानता को मान्यता प्राप्त होगी। जिन वस्तुओं से लंबे समय तक वंचित रहना पड़ा था, अब वह बड़ी सरलता से प्राप्त होगी। इसलिए प्रयत्न की ज़रूरत नहीं है। धन प्राप्ति का योग है। कार्यक्षेत्र में अथवा पद में परिवर्तन की संभावना दिखाई देती है। परीक्षा के वक्त उसके नतीजे का अन्दाज़ा लगा सकेंगे। शुभ आकांक्षाओं के साथ आगे बढ़ना लाभदायक माना जाता है। स्थाई संबन्ध स्थापित करने के लिए योग्य समय माना जा सकता है। मांगलिक व भाग्योदय कारक कार्य संपन्न होंगे।

∇ (16-डिसंभ्बर-2009 >> 15-जानुवरी-2010)

इस समय रवि चौथा भाव का सक्रमण करेगा

अब सूर्य से अनुकूलता के बदले प्रतिकूल स्थिति का सृजन ज़्यादा होगा। कौटुम्बिक कार्यों में अनेक मतभेद उत्पन्न होंगे। इन मतभेदों का भीमकाय स्वरूप न हो जाये उसके प्रति सजग रहें। सहकर्मियों से या नट-खट बच्चों से मन क्रोध से भर उठेगा। समय व्यय और कार्य में विलंब होता रहेगा। अन्य लोगों से मान्यता और सम्मान से वंचित रहना पड़ता है ऐसा भ्रम उत्पन्न होगा। रोगग्रस्त होना पड़े तो आश्चर्य नहीं। काल्पनिक बातों से व्यर्थ का भय उत्पन्न

होगा। ज़रूरत पड़ने पर डाक्टरी जाँच अनिवार्य बनेगी। समस्याओं का बुद्धिमत्ता से हल निकालना उचित माना जायेगा।

गुरु का गोचर फल।

गुरु हर राशि के बीच एक साल तक रहता है। गुरु के कारण मिलनेवाले फल की प्राप्ति अति प्रधान होती है।

∇ (31-जूलाई-2009 >> 19-डिसंभ्बर-2009)

इस समय गुरु पंचम भाव का सक्रमण करेगा

गुरु के माध्यम से अनुकूल स्थिति का निर्माण हो रहा है। जीवन में संतोष और सुख की प्राप्ति होगी। अपने घर में या पड़ोस में बच्चे का जन्म होगा और उस कारण से आनन्द का अनुभव होगा। मानसिक शान्ति उत्पन्न होगी। रचनात्मक प्रगतिशील चिंतन के माध्यम से आनंद का अनुभव होगा। वर्तमान स्थिति में बदलाहट की संभावना है। साक्षात्कार में भाग लेने का मौका प्राप्त होगा। नये वस्त्र परिधान की ओर तथा आभूषणों के प्रति आपका ध्यान केन्द्रित होगा। लेखन-प्रकाशन में सफलता प्राप्त होगी।

∇ (20-डिसंभ्बर-2009 >> 01-मे-2010)

इस समय गुरु छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

आपकी योग्यता के अनुकूल अनेक सुख सुविधाएं प्राप्त होगी। ऐसे होते हुए भी आत्मसंतोष से वंचित रहना पड़ेगा। कुछ समय तक गुरु से अनुकूल स्थिति पैदा नहीं होगी। फिर भी निकट भविष्य में सुख और आनंदपूर्ण जीवन उपलब्ध होगा। सत्कार समारोह में, तथा समाजिक कार्यों में योग्य सन्मान प्राप्त होगा। अन्य सन्मानपूर्ण व्यक्ति का ध्यान आपकी ओर केन्द्रित होगा। मामा या मौसी के घर में कोई सामाजिक उत्सव मनाया जायेगा, जिसमें आपकी उपस्थिति अनिवार्य रूप से होगी।

शनि का गोचर फल।

शनि का गोचर फल साधारण स्थिति में शनि से दुःखद अनुभव ही होता है। शनि के योग के कारण अस्वस्थ स्थिति उत्पन्न होती है। मन उद्वेग से भर उठता है। यह सब होते हुए भी कभी कभी अप्रतिक्षित मार्ग से शनि अनेक लाभ भी प्रदान करता है। हर राशि के मध्य शनि दो वर्ष तक स्थान ग्रहण करता है।

∇ (10-सितंम्बर-2009 >> 15-नवेम्बर-2011)

इस समय शनि जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

साढ़े सात वर्ष की शनि की साढ़े साती चल रही है। साधारण स्थिति में यह भयानक और अस्वस्थता पैदा करने वाली होती है। आपका सगा भाई भी आपका विरोध करेगा। दूसरों की बात न जाने वही अच्छा है। किस प्रकार से कौन सा कार्य करना चाहिए इस सोच में पड़ जायेंगे। हर कार्य छिन्न-भिन्न हो जायेगा। परेशानी से मुक्त होना कठिन है। नित्य उपयोगी यंत्र सामग्री ठीक प्रकार से कार्य करना बंद कर देगी। स्नेहसम्बन्ध कटुता से भर जायेंगे। आपके पुरुषार्थ के प्रति लोग उँगली उठायेंगे। सम्मान पर काला धब्बा लगेगा। आर्थिक कष्ट उठाना पड़ेगा। व्यापार में नुकसान हो जायेगा। प्रभु चरणों में अपने आपको समर्पित करना ही एक मात्र मार्ग दिखाई दे रहा है। व्यर्थ के मानसिक तनाव से बचिये।

∇ (16-नवेम्बर-2011 >> 13-मे-2012)

इस समय शनि दूसरा भाव का सक्रमण करेगा

साढ़े सात की शनि दशा के क्रूर और दयनीय विषमता में कुछ कमी होगी। फिर भी थोड़ी सी अस्वस्थता, असंतोष और भी रहेगा। संक्षिप्त में कहा जाये तो और भी थोड़े समय तक उद्वेगपूर्ण वातावरण को सहना होगा। फिर भी छोटी-छोटी सुखद घटनाओं के कारण मन में थोड़ा सा सुधार यानी आश्वासन प्राप्त होगा। घर में विनोदमय कार्यों से मन हल्का सा होगा। आपकी संपत्ति के प्रति आकर्षित हुई महिला आपके साथ संबन्ध स्थापित करने का प्रयास करेगी। मलिन वृत्ती की महिला से बचते रहें तो योग्य होगा। परिवार में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा।

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।
१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	गुरु	10-05-1996	04-10-1998	अनुकूल
राहु	बुध	10-08-2001	27-02-2004	अनुकूल
राहु	शुक्र	17-03-2005	17-03-2008	अनुकूल
गुरु	शनि	16-10-2013	28-04-2016	अनुकूल
गुरु	बुध	28-04-2016	04-08-2018	उचित
गुरु	केतु	04-08-2018	11-07-2019	अनुकूल
गुरु	शुक्र	11-07-2019	11-03-2022	उचित
गुरु	रवि	11-03-2022	28-12-2022	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	28-12-2022	28-04-2024	अनुकूल
गुरु	मंगल	28-04-2024	04-04-2025	अनुकूल
गुरु	राहु	04-04-2025	29-08-2027	अनुकूल
शनि	बुध	01-09-2030	11-05-2033	अनुकूल
शनि	शुक्र	20-06-2034	19-08-2037	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सातवी अधिपति, सातवी भाव में उपस्थित गृह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय विवाह के लिए अनुकूल दिखाई पढ़ता है ।
१८ उम्रे से लेकर ५० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	गुरु	10-05-1996	04-10-1998	उचित
राहु	शनि	04-10-1998	10-08-2001	अनुकूल
राहु	बुध	10-08-2001	27-02-2004	उचित
राहु	केतु	27-02-2004	17-03-2005	अनुकूल
राहु	शुक्र	17-03-2005	17-03-2008	उचित
राहु	रवि	17-03-2008	08-02-2009	अनुकूल
राहु	चन्द्र	08-02-2009	10-08-2010	अनुकूल
राहु	मंगल	10-08-2010	29-08-2011	अनुकूल
गुरु	शनि	16-10-2013	28-04-2016	अनुकूल
गुरु	बुध	28-04-2016	04-08-2018	उचित
गुरु	केतु	04-08-2018	11-07-2019	अनुकूल
गुरु	शुक्र	11-07-2019	11-03-2022	उचित
गुरु	रवि	11-03-2022	28-12-2022	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	28-12-2022	28-04-2024	अनुकूल

गुरु	मंगल	28-04-2024	04-04-2025	अनुकूल
गुरु	राहु	04-04-2025	29-08-2027	उचित

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
मंगल	रवि	21-09-1992	27-01-1993	अनुकूल
राहु	गुरु	10-05-1996	04-10-1998	अनुकूल
राहु	शनि	04-10-1998	10-08-2001	अनुकूल
राहु	बुध	10-08-2001	27-02-2004	अनुकूल
राहु	शुक्र	17-03-2005	17-03-2008	अनुकूल
राहु	रवि	17-03-2008	08-02-2009	अनुकूल
गुरु	शनि	16-10-2013	28-04-2016	उचित
गुरु	बुध	28-04-2016	04-08-2018	उचित
गुरु	केतु	04-08-2018	11-07-2019	अनुकूल
गुरु	शुक्र	11-07-2019	11-03-2022	उचित
गुरु	रवि	11-03-2022	28-12-2022	उचित
गुरु	चन्द्र	28-12-2022	28-04-2024	अनुकूल
गुरु	मंगल	28-04-2024	04-04-2025	अनुकूल
गुरु	राहु	04-04-2025	29-08-2027	अनुकूल
शनि	बुध	01-09-2030	11-05-2033	उचित
शनि	केतु	11-05-2033	20-06-2034	अनुकूल
शनि	शुक्र	20-06-2034	19-08-2037	उचित
शनि	रवि	19-08-2037	01-08-2038	उचित

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पञता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
राहु	गुरु	10-05-1996	04-10-1998	अनुकूल
राहु	शुक्र	17-03-2005	17-03-2008	अनुकूल
गुरु	शनि	16-10-2013	28-04-2016	अनुकूल
गुरु	बुध	28-04-2016	04-08-2018	अनुकूल
गुरु	केतु	04-08-2018	11-07-2019	अनुकूल

गुरु	शुक्र	11-07-2019	11-03-2022	उचित
गुरु	रवि	11-03-2022	28-12-2022	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	28-12-2022	28-04-2024	अनुकूल
गुरु	मंगल	28-04-2024	04-04-2025	अनुकूल
गुरु	राहु	04-04-2025	29-08-2027	अनुकूल
शनि	शुक्र	20-06-2034	19-08-2037	अनुकूल
शनि	गुरु	15-02-2044	29-08-2046	अनुकूल
बुध	शुक्र	21-01-2050	21-11-2052	अनुकूल

अष्टकवर्गा

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	सभी मिलाकार
मेष	3	4	7	6	5	5	3	33
वृषभ	5	4	5	3	6	4	4	31
मिथुन	6	4	2	2	1	3*	4	22
कर्क	2	4	5	5	3*	6	3	28
सिंह	3	4	5	3	2	6	1*	24
कन्या	7*	4	3	4	3	5	4	30
तुला	4	5	6	6	4	6	6	37
वृशचिक	3	5	4*	4	4	1	4	25
धनु	3	1*	3	5*	1	5	4	22
मकर	3	3	5	5	2	7	2	27
कुंम्भ	5	5	4	3	5	3	2	27
मीन	5	5	5	6	3	5	2	31
	49	48	54	52	39	56	39	337

* गृहों का स्थान.
लग्न धनु में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

उच्च विचार उनका लक्षण है जो अपने जन्मकुण्डली के चन्द्र अष्टकवर्गा में सात बिन्धुओं के उपस्थिति से अनुग्रहित हो । आपको मत्र शास्त्रों और अन्य पाडित्य क्षेत्रों की पढ़ाई में दिलचस्पी होगा । वेदों के ज्ञान की पढ़ाई के ओर आपका असाघारण झुकाव आपके बारे में विशिष्ट परिवेश बनाएगा ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

सूर्य के अष्टकवर्गा में सिर्फ एक ही बिन्धु है । यह सूचित करता है कि आपके जीवन में ऐसा परिस्थिति होगा जब बिना किसी मुख्य लक्षय न हो । आपको अनेक कष्टो और स्वास्थ्य सम्बधित परेशनियों का सामना करना पड़ेगा । गृहों के चेतावनी को मन में रखकर बुरे समय और परिस्थितियों की तीव्रता को कम करने के लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

बुध के अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिन्धु उधोग और रोजगारी के लिए उचित नहीं है । यह एक सूचना होता हुए भी

आप हर अवसर पर अच्छी तरह काम करेगें अपने स्थायी पद का मज़बूत करके प्रतिकूल गृह उपस्थिति को शान्त करेगें । उधोग से सम्बधित नष्टों को भोखने के लिए मानासिक शक्ति को उत्पन्न करना चाहिए ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

आपको जीवन का सबसे अच्छा चीज अपने दोस्तों के सहयोग से मिलेगा ।सामाजिक रुप से स्वीकृत कोमलता और प्रसिद्दि आपके व्यक्तित्व को सूचित करता है और यह आपके सफलता का मुख्य तत्व है । अपने सामाजिक योग्यताओ से आप मानवीय और कर्मचारी अनुशासन सम्बधित क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते है ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

मंगल के अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धु यह सूचित करता है कि आपको अपने प्रिय लोगें से दूर रहना पडेगा । यह आपके विदेशी उधोग के कारण होगा । आप इस वियोग को पूर्ण रुप से आनन्द नहीं कर साकेगो फिर भी आपको यह सहना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

आपका कोमल कान आपके जन्मकुण्डली के गुरु अष्टकवर्गा में उपस्थित तीन बिन्धुओं से प्रभावित होगा । यह आपके आलस्य का कारण बन जाएगा । पोषक युक्त भोजन खाने के लिए विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

आपको ज्यादा धन-सम्पत्ति प्राप्त करने का योग नहीं है और जो सम्पत्ति आपके पास है यह नष्ट होने की सभावना है । यह कोई अप्रत्याशित कारण से या भगवान की लीला विलास ते होगा । यह आपके जन्मकुण्डली में उपस्थित अकेले बिन्धु का कारण होगा जो शनि अष्टकवर्ग का अधिकार करता है । युद्व, विप्लव क्षेत्र, सामाजिक और राजनीतिक रुप से विभाजित क्षेत्र और विपत्ति युक्त क्षेत्रों से दूर रहना चाहिए ताकि बुरे प्रभावों को कम कर सकें । मुसीबतों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए । अपने गृहों के प्रभाव पर आपका ज्ञान अपरिहार्य घटनाओं को सामना करना का शक्ति प्रधान करेगा ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

तीसरा भाव पच्चीस-तीस बिन्धुओं से सम्बधित है और सूर्य और शनि के दृष्टि में है । आपको मूत्राशय सम्बधित रोगें का सामना करना पड़ेगा । बहुत ज्यादा पानी पीने के लिए ध्यान रखना चाहिए नहीं तो वृक् सम्बधित रोगें का सामना करना पडेगा। नक्षत्रों के शक्त चेतावनी को ध्यान में रखकर उसको मार्ग दर्शक बनाए ताकि आपको अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त हो ।

आपके जन्मकुण्डली में बिन्धुओं को अधिकतम फैलाव कर्क राशी से तुला राशी तक है जो आपके यौवन वर्षों को सूचित करता है । आपका उधोग उन्नत पद तक पहुँच सकता है । शैक्षणिक और व्यक्तिगत अभिलाषा इस समय उत्पन्न होता है और संतोष और समृद्दि उच्च स्थान पर होगा । भाग्य आपको बेकारी और शैक्षणिक खिंचाव को अनुभव करना का अवसर नहीं देगा । गृहस्थ सम्बधी चिरानन्द भी आपको प्राप्त होगा ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीी में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्दि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय २२ और २५ उम्र में होगा ।

With best wishes :
Astrowin,Selvi Xerox,
88,Kumaran Road,Tiruppur-1, TamilNadu, India. Ph : 0421 2244199 www.astrowin.in

[LifeSign 12.0S Hin-0-091105]

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.